9362
1523

## * स्वामी श्री५महावीरदास महाराजजी *

॥ श्रीअयोध्या बड़ी छावनी के महात्मा ॥

यह पोथी ( श्री सीतारामनामयशप्रकाश ) पढ़ने से चित्त प्रसन्न भया, इस पोथी में "श्रीराम तिलक नवक दोहा" संग्रह होना अति आवश्यक है क्योंकि इस पोथी के पढ़ने से कम समझ वाले जन संग्रहकर्ताजी के मुख्य आशय ( श्रीसद्गुरु द्वारा श्रीरामजी के पंच संस्कार प्राप्त करना हीं परम पुरुषार्थ है ) को नहीं समझ कर ऐसा समझेंगे के माला तिलक धारन करने से क्या होगा श्रीराम नाम जपना चाहिये इसीसे सब प्रकार का आनन्द मिलेगा सो यह समझना उनकी भूल है क्योंकि

---

* यह महात्मा वर्तमान में जि० गया मौ० खखरी, वोढ़नपुर, नेपुरा आदि ग्रामों में कुटिया बनाकर जीवोंको कृतार्थ करते हैं,

बिचार करके देखा जाय के जब पंचदेवादि की पूजा करने लगते हो तब उस समय पुरोहितजी बिना तिलक की पूजा करना अफल समझ कर तिलक लगा देते हैं, तो श्रीनाम नरेश महाराजजी के जप रूपी पूजामें तिलक नहीं लगाना यह कैसी अयोग्य समझ है! इससे माला तिलक अवश्य धारन करना चाहिये क्योंकि श्रीरामदास का यह मुख्य बाहच चिन्ह है॥
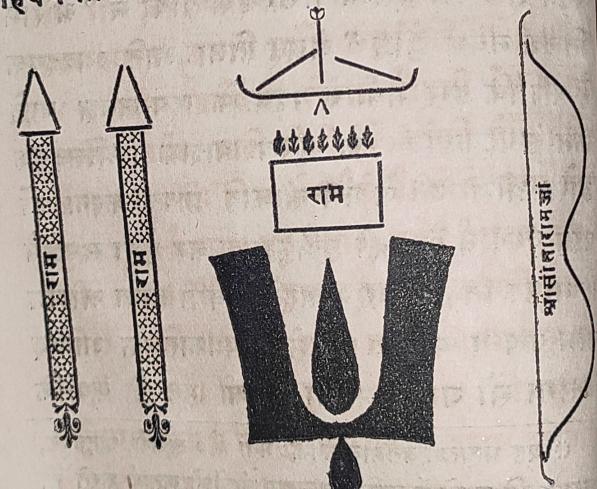
## ॥ अथ रामतिलक नवक दोहा ॥

श्रीतिकार सीता सुमधि, लखन लकार सुजान ॥ राम ब्रह्म कंकहाति श्रुति, तिलक अर्थ इमि जान ॥ १ ॥ श्रुति कह प्रभुके पदलते, काल्पित भूमि निदान ॥ तिलक मृत्तिकै को करै, हरि पादाङ्क प्रमान ॥ २ ॥ अंगुल अंगुल मोट दोउ, चरण अंकको रेख ॥ युग अंगुल मधि संधितजि, तँह धारै श्रीबेख ॥ ३ ॥ चतुरंगुल चौड़ा तिलक, उत्तम भाषत संत ॥ करै तिहाई नाकते, उर्द्धकेश पर्यंत ॥ ४ ॥ दहिने बाँऐ तिलक के, विधि शिव श्रीहरि बीच ॥ ताते मध्य न लेपई लेपै सो अति नीच ॥ ५ ॥ त्रय अंगुल मध्यम कहत, अंगुल दुइ अधमर्थ ॥ दुइ अंगुल ते कम तिलक, बिस्तर जानहु व्यर्थ ॥ ६ ॥ राम तिलक बिन भूतसम, दरशत भाल कुरूप ॥ तिलक सहित रसरङ्गमणि, शोभित साधु स्वरूप ॥ ७ ॥ तिलक दुहूँदिशि धारई, सीताराम सुनाम ॥ प्रभु नामाङ्कित भालके, मिटत कुभाग निकाम ॥ ८ ॥ रामायुध बाँये

धनुष, दाहिने भुज युग बान ॥ शिरधनु शर मुद्रा युगल, धारै भक्त सुजान ॥ ९ ॥ श्रीरामानन्दीय यह, तिलक नवक रसरङ्ग ॥ यहि विधि धारै तिलक तन, जपै नाम सउमङ्ग ॥ १० ॥ श्रीतुलसीबानी विमल, श्रीतुलसी की माल ॥ जिनके गल रसरङ्गमणि, ते तरिहैं कलिकाल ॥ ११ ॥

॥ कवित्त ॥

हड्डी और चामका बनाया हुआ पूतला है, नाम का न प्रेमी है तो आदमी है नामका ॥ भटका सा शामका पखेरू ऐसा उड़त है, न छाया का न घामका न इमली का न आमका ॥ बाम और दामका गुलाम बना रहता है, अम्बादत्त प्रेम कभी किया नहीं श्याम का ॥ उल्लू है तमाम का किसी के नहीं कामका, जो रामका न दास है तो जीना है हराम का ॥ १ ॥

श्रीसीतारामार्पण
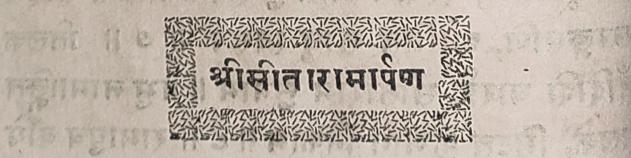
दो० महाराज श्रीराम जय, सिय महरानी संग ॥
भरत लखन रिपुदवन जय, हनुमदादि रसरंग ॥

जय श्री रघुवर जानकी, भरत लखन रिपुशाल ॥
हनुमतयुत रसरंगमणि, हिय बसिए जनपाल ॥

## श्रीरामपंचायतन ।

वन्दौं सिंहासन लसे, श्री सीता रघुराज ॥
चँवर छत्र रसरंगमणि, गहि भरतादिक भ्राज ॥

पूरनिमा निशि भगति तव, नखत अपर प्रभुनाम ॥
रामनाम वर चन्द्र सम, हिय नभ निवसैं राम ॥

श्रीसीतारामनामयशप्रकाश का-

# सूचीपत्रम् ।

इति ।

॥ श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥

# भूमिका।

रे मन! श्रीसीतारामजी की कृपा प्रेरणा से तुझसे जो मैं कहता हूँ उसे सावधान होकर सुन और उसके अनुकूल काम कर तब तुझको लोक में अनेक प्रकार का सुख प्राप्त होगा और परलोक में भी परमानन्द मिलैगा, यथा पद "रामनाम कामतरु जोई जोई माँगिहै, तुलसिदास स्वारथ परमारथौ न खाँगिहै" भला विचार तो कर कि चौरासी लक्ष योनियों में भ्रमते भ्रमते श्रीसीतारामजी की करुणा ही से अतिदुर्लभ मनुष्य का शरीर प्राप्त हुआ है, चौरासी लक्ष योनि यथा श्लोक "स्थावरं विंशतेर्लक्षं जलजं नवलक्षकम्। कूर्मश्च रुद्रलक्षं च दशलक्षं च पक्षिणः ॥१॥ त्रिंशल्लक्षं पशूनाञ्च चतुर्लक्षं तु वानरः। ततो मनुष्यतां प्राप्य ततः कर्माणि साधयेत् ॥२॥ अर्थ॥ बीस लाख वृक्षादि स्थावर योनि हैं, नव लाख जल के जीवों की, ग्यारह लाख भूमि को खनके रहनेवाले कूर्मादिकों की, दश लाख पक्षियों की, तीस लाख चारपदवाले पशुवों की, चार लाख वानर ऋक्षादिकों की योनि हैं॥" इन चौरासी लक्ष योनियों से पृथक् महाअमोल नरशरीर पायके श्रीसीतारामभक्तिमार्गो-

पदेशक जीवस्वरूप और ईश्वरस्वरूप के ज्ञानदायक युगल सम्बंधविधायक श्रीसद्गुरु द्वारा मन वचन कर्म से श्रीसीता-रामजी के शरणागत होकर उनके नाममंत्र ही का जपना अति योग्य है उसींसे चौरासी का भ्रमण जन्म मरण का दुःख छूटैगा और यत्न से नहीं, यथा दोहा " रामनाम अवलंब बिन परमारथ की आश। तुलसी वारिद बूँद गहि चाहत चढ़न अकाश" कलि-युग में श्रीरामनाम रटना ही परम पुरुषार्थ है और साधन व्यर्थ है, परन्तु नामको नियम से जपना अति आवश्यक है क्योंकि इसका प्रमाण अत्रिसंहिता में श्रीशिवजी ने पार्वतीजी से कहे हैं, यथा श्लोक " श्रीमद्रामेति नाम्नस्तु नियमं धारणं सदा। कर्त-व्यं सावधानेन त्यक्त्वा प्रमादिकं शिवे ॥१॥ तावद्वै नियमं कार्य्यं यावच्चित्तं न संस्मरेत्। अनियमंकृतं जाप्यं निष्फलं प्रथमं प्रिये ॥२॥ नियमेनैव श्रीरामनाम्नि प्रीतिर्ध्रुवा भवेत्। तस्माद्विपर्ययं त्यक्त्वा नियमं संचरेद् बुधः ॥ ३ ॥ अर्थ, हे पार्वति ! प्रमाद अचेतता आदिक त्यागकर श्रीरामनाम का नियम सावधानता से सदा धारण करना चाहिये। तबतक नियम की अति आवश्यकता है कि जबतक चित्त सहज स्वभाव से नहीं नाम स्मरण करै। बिना नियम का जप प्रथम अवस्था में यथार्थ फलदायक नहीं क्योंकि नाम छोड़कर वार्तादिक में पड़ जाता है, और नियम करते करते श्रीरामनाम में निश्चल प्रीति प्रगट होती है, इससे विपरीति त्यागकर नियम करना चाहिये " वह नियम जो लक्ष

नाम का होय तो परम भाग्य है, अथवा, पचास हजार का भी नियम भाग्य ही से निबहता है, और पचीस हजार से कम का नियम तो करना ही न चाहिये क्योंकि ( २१६०० ) यक्कीस हजार छ सौ स्वासा सहज में चलते हैं और परिश्रम से अधिक बढ़ जाते हैं इससे प्राति स्वास श्रीरामनाम स्मरण करने से श्रीराम-मय काल बीतता है, यथा दोहा "स्वास स्वास प्रति राम कहु वृथा स्वास जनि खोउ। नाहि जानौं यह स्वास का आवँन होउ न होउ ॥ १ ॥" भाव यह है कि जो स्वासा नाम विहीन जाते हैं वे कालरूप शुभाशुभ कर्म फलदायक हैं और श्रीरामनाम युक्त स्वासा मुक्तिदायक हैं ॥ कवित्त ॥ सहस पचीस लौ जपत जौन जीह नाम राम अभिराम ताहि मंगल अवेशे हैं। जाके नेम अचल पचास सहसाधिक है सो तो देव देविन ते पूजित विसेसे हैं ॥ जौन अनुरागी बड़भागी के सुनेम लक्ष सो तो परत्यक्ष स्वच्छ रहित अँदेसे हैं। युगल अनन्य ताकी महिमा बखानै कौन जाके सुखसागर की रटन हमेसे हैं ॥ १ ॥ सो श्रीनाम नियम की गणना करने के लिए तुलसीजी की माला तो प्रसिद्ध ही है परन्तु "सीताराम" इन चारो अक्षरों की लेखना-त्मिका माला भी दृष्टिरूपी हस्त से जपने में अति गुणदायक जानी जाती है। गुण यह है कि एक तो नाम के चारों वर्णों का दर्शन भी जपते में होता जाता है और अक्षरों में दृष्टि लगाके रोकने में मन की चंचलता भी बहुत रुक जाती है, इस हेतु से जपने

के लिये अर्थात् पाठ करने के लिये " सीतारामसहस्त्रमाला " भी लिखे देता हूं कि जिसका एक पाठ करने से एक हजारा माला जपने का गिन्ती हो जायगी, जितने हजार नाम का नियम होवैं तितने पाठ करने से नियम पूरा हो जायगा ॥ क्यों-कि प्रथम अवस्था में नियम अति सहायक है और नियम से नाम रटने विना पीछे पश्चात्तापही से तपना होगा, यथा चौपाई "हानि कि जग यहि सम कछु भाई । भजिय न रामहिं नरतन पाई ॥ दोहा ॥ सब साधन रसरङ्गमणि तजु भजु सजु श्रीराम । कलि में नहिं तिहुँ ताप तपु जपु जपु जिय युग नाम ॥ १ ॥ वर्षा ऋतु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ॥ रामनाम वर बरन युग सावन भादौं मास ॥ २ ॥ रामनाम मणिदीप धरु जीह देहरी द्वार ॥ तुलसी भीतर बाहेरौ जौ चाहसि उजियार ॥३॥ चौपाई ॥ अति अनन्य जे हरि के दासा । जपहिं नाम निशि दिन प्रति स्वासा ॥

# अथ सीताराम-सहस्रमाला ।

१ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
२ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
३ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
४ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
५ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
६ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
७ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
८ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
९ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
१० सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
११ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
१२ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

१ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
२ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
३ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
४ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
५ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
६ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
७ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम
८ सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम सीताराम

(१०८०)

इति श्रीसीतारामोपासक रामानन्दीय स्वामि अनन्त श्रीसीतारामशरण श्रीरामरस रङ्गमणिशिष्येण श्रीसियारघुबरशरणेन रचिता श्रीसीतारामसहस्रमाला सम्पूर्णा श्रीसीता-रामचन्द्रार्पणमस्तु ॥

दोहा।

सुमिरण करिले रामको, काल गहाहै केस।
ना जाने कब मारिहैं, क्या घर क्या परदेस॥१॥

कवित्त।

करत करत धन्ध कछुवो न जाने अंध आवत निकट दिन आगिलो चपाकिदै। जैसे बाज तीतर को दाबत अचानक में जैसे बक मछरी को लीलत लपाकि दै। जैसे घात माखिन पै मकरी करत आय जैसै सांप मूषक को ग्रसत गपाकिदै। चेत रे अचेत मन सुंदर संभारु राम ऐसे तोहिं काल आय लेइ-गो टपाकिदै॥ १॥

दोहा।

अपनो करि रसरङ्गकौं, हरि विमोह मद काम।

सीताराम रटाइए, रोम रोम निज नाम ॥ १ ॥
राम रावरे नाम विन, धिग जीवन जग मांहि ।
नाम प्रेम जुत धन्य जन, प्रभु कीजे मोहि कांहि ।२।

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ॥ श्रीसीताराम-नामभ्यां नमः ॥ अब सर्वोपरि श्रीसीतारामनाम में प्रीति प्रतीति होने के लिये उन महानुभाव ईश्वरों मुनीश्वरों के नाना पुराण संहितादिकों में कथित वचनों के प्रमाण देताहूं कि जिन्हों-ने स्वयं श्रीनामस्मरण कीर्तन करके यथार्थ श्रीरामनाम का यश प्रताप वर्णन किया है, उनके वचन श्लोकों का वार्त्तिक अर्थ भी लिखता-हूं और संपूर्ण श्रीसीतारामनामानुरागियों के चरणकमलों को वारम्वार वंदताहूं ॥

श्रीसीतारामनामानुरागिभ्यो नमः ।

अथ

# श्रीसीतारामनामयशप्रकाश ।

---

श्लोक ।

वन्दे श्रीरामचन्द्रस्य नाममुक्तिप्रदं परम् ॥ यत्कृपालेशतोऽस्माकं सुलभं सर्वतस्सुखम् ॥ १ ॥

सोरठा ।

बन्दौं सीताराम, नाम महामहिमाअवधि ॥
भुक्ति मुक्ति सुख धाम, महापतितपावन सुविधि१

( श्लोकार्थ ) हम सबसे परे मुक्ति के देनेवाले श्रीरामचन्द्रजी के नाम की बन्दना

करतेहैं कि जिनकी कृपा के लवलेश से हमको सब प्रकार से सुख प्राप्त हुआ ॥ १ ॥

भजस्व कमले नित्यं नाम सर्वेशपूजितम् ॥ रामेति मधुरं साक्षान्मया संकीर्त्यते हृदि ॥ २ ॥ यत्प्रभावान्मया नित्यं परमानन्ददायकम् ॥ रूपं रसमयं दिव्यं दृष्टं श्रीजानकीपतेः ॥ ३ ॥

भविष्योत्तर पुराण में दो श्लोक से श्रीनारायणजी श्रीलक्ष्मीजी के प्रति श्रीनामयश कहतेहैं । हे कमले ( लक्ष्मी ) अस्मदादिक सब ईश्वरों करिकै पूजित साक्षात 'राम' ऐसा मधुर नाम जिसको कि हम नित्य ही अपने हृदय में कीर्त्तन भजन करते हैं तिनको तुम

नित्य ही भजो ॥ २ ॥ जिस नाम के प्रभाव से नित्य परमानन्ददायक रसमय श्रीजानकी-पति का दिव्य रूप हमने देखाहै, तात्पर्य्य यह है कि जब हम सप्रेम नाम लेते हैं तब रूप का साक्षातकार हो जाता है ॥ ३ ॥

यथा कवित्त।

रामनाम रटे राम आपहीं दिखाइहैं ॥ भूमि के खनेते आप आपहीं कढ़त जैसे पढ़त पढ़त पूरी पंडिताई पाइहैं ॥ ग्रास ग्रास खात ही सुतुष्ट ज्यों चलेते पथ आपहीं सिरात घर जाइ ठहराइहैं ॥ काठ के घिसत आगि आपै प्रघटात जिमि मथत मथत दूध माखन सो खाइहैं ॥ जानि यह बात ठीक रटै रसरङ्गमणि रामनाम रटे राम आपहीं दिखाइहैं ॥ १ ॥

अब आदिपुराण तथा पद्मपुराण में नव श्लोक से श्रीकृष्णचन्द्रजी अर्जुन के प्रति श्रीनामयश कहतेहैं॥

रामनाम सदा प्रेम्णा संस्मरामि जगद्गुरु॥ क्षणं न विस्मृतिं याति सत्यं सत्यं वचो मम॥ ४॥

हे सखे हमारे वचन सत्य सत्य हैं, हम सर्वदा प्रेमपूर्वक सब जगत के गुरु अर्थात् ज्ञान देनेवाले श्रीरामनाम को स्मरण करते हैं क्षण भर भी नहीं भूलते॥ ४॥

रामस्मरणमात्रेण प्राणान्मुञ्चन्ति ये नराः॥ फलं तेषां न पश्यामि भजामि तांश्चपार्थिव॥ ५॥ नामस्मरण

मात्रेण नरो याति निरापदम् ॥ ये स्मरन्ति सदा रामं तेषां जाने न किं फलम् ६

हे पार्थिव क्षत्रियोत्तम ! श्रीरामजी को स्मरण करते मात्र में जे नर प्राण को त्याग करते हैं तिनको जो फल प्राप्त होताहै सो हम जगत् मात्र में नहीं देखते अर्थात मन वचन अगोचर आनन्दपद को प्राप्त होते हैं और उनका भजन सेवन हम स्वयं करते हैं ॥ ५ ॥ श्रीरामनामस्मरणमात्र से मनुष्य दुःखरहित परम पद को प्राप्त होताहै और जे निरन्तर श्रीरामजी को स्मरण करते हैं तिनको जो फल प्राप्त होता है सो हम नहीं जानते अर्थात् उनका फल अनिर्वचनीय है ॥ ६ ॥

कुर्वन्वा कारयन्वापि रामनामजपं तथा ॥ नीत्वा कुलसहस्राणि परं धामाधिगच्छति ॥ ७ ॥ घोषयेन्नाम निर्वाणकारणं यस्त्वनन्यधीः ॥ तस्य पुण्यफलं पार्थ वक्तुं कैः शक्यते भुवि ॥ ८ ॥

जो श्रीरामनाम का जप स्वयं करते हैं तथा उपदेश करके और अन्न द्रव्यादि देकर औरों से कराते हैं वे जन श्रीरामनाम के प्रताप से अपने कुल के हजारों पुरुषों को लेकर परम धाम को जाते हैं ॥ ७ ॥ हे पार्थ जो जन अनन्यमति होकर निर्वाण ( मोक्ष ) का कारण जो श्रीरामनाम तिसको घोषते हैं तिसके नामोच्चारणरूप पुण्य का फल भूमिमात्र में कौन

कहिसकताहै अर्थात कोई नहीं कहिसकता॥८॥

दोहा।

रामनाम-सुमिरन भजन, नामहिं पूजाप्रेम। तप तीरथ रसरंगमणि, नामयोग सुख छेम॥१॥ रामनाम हरदी गिरह, रगरेही सरसाय। धरम दास रगरे विना, ज्यों के त्यों रहि जाय॥२॥

(पद) शंभु सिखवन रसनहूं नित राम नामहिं घोषु॥ दम्भहूं कलिनाम कुम्भज शोच सागर सोषु॥

स्मरन्ति रामनामानि त्यक्त्वा कर्मा-णि सर्वशः॥ ते पूताः सर्वपापेभ्यः पद्मपत्र-मिवाम्भसा॥९॥ ये कर्माणि प्रकुर्वन्ति त्यक्त्वा श्रीरामनामकम्॥ तेषां कर्माणि

बन्धाय न सुखाय कदाचन ॥ १० ॥

जो जन सर्व कर्मों को त्याग कर श्रीराम नामजी को स्मरण करते हैं ते जन सर्व पाप- रूपा अशुद्धता से पवित्र होजाते हैं फिर उनको पाप किस प्रकार नहीं स्पर्श कर सकते जैसे कि कमल के पत्र को जल नहीं स्पर्श कर सकता ॥ ९ ॥ और जो श्रीरामनाम ही को त्यागकर अनेक कर्मों को करते हैं तिनके कर्म बंधन ही के हेतु होते हैं, सुख के कारण कभी नहीं होते ॥ १० ॥

रामनाम सदा पुण्यं नित्यं पठति यो नरः ॥ अपुत्रो लभते पुत्रं सर्वकाम- फलप्रदम् ॥ ११ ॥ भूतले सर्वतीर्थानि

आसमुद्रसरांसि च ॥ सेवितानि च ये-
नोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ १२ ॥

( पद्मपुराण में श्रीकृष्णचन्द्रजी के वचन हैं ) जो मनुष्य अपुत्री होवै परन्तु परम पवित्र सब कामना फलों को देनेवाले श्रीरामनाम को नित्य निरन्तर पढ़ता-जपता है तौ अवश्य सुपुत्र पावता है ॥११॥ सब समुद्र तथा नारायण मानस, विन्दु आदिक सरोवरों से सहित भूमि-मंडलमात्र के सब तीर्थों का स्नान-सेवन वह मनुष्य कर चुका कि जिसने श्रीराम इन दोनों अक्षरों को उच्चारण किया ॥ १२ ॥ रे मन इन वचनों को सुनकर तू ऐसी शंका मत करना कि श्रीविष्णु कृष्णचन्द्रजी श्रीरामनाम क्यों

जपते हैं श्रीरामजी से और उनसे क्या भेद है, क्योंकि यह उपासनापरत्व का भेद शिव, हनुमान्, भुसुंडि, याज्ञवल्क्यादि तथा तुलसीदासादि परमानन्य श्रीरामोपासकों का सिद्धान्त श्रीरामायणादिकों में प्रसिद्ध है, यथा चौपाई ॥ संभु विरंचि विष्णु भगवाना ॥ उपजहिं जासु अंसते नाना ॥ १ ॥ विधि हरि हर तप देखि अपारा ॥ मनु समीप आये बहु वारा ॥ २ ॥ मांगहु वर बहु भांति लोभाए ॥ परम धीर नहिं चलहिं चलाए ॥ ३ ॥ सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनू ॥ विधिहरिहरवन्दित पदरेनू ॥४॥ विष्णु कोटि सम पालन-कर्त्ता ॥ रुद्रकोटिसत सम संहर्ता ॥ ५ ॥ " जब विष्णु कोटि सम पालन कर्त्ता श्रीरामजी हैं तब विष्णु कृष्णचन्द्र

जी को श्रीरामनाम जपने में क्या शंका है॥ तथा विनय पद " हरिहिं हरिता विधिहिं विधिता शिवहिं शिवता जिन दई ॥ सोइ जानकीपति मधुर मूरति मोदमय मंगलमई " ( गीतावली पद ) दूसरो न देखियत साहिब सम रामै ॥ विधिसे करनहार हरिसे पालनहार हरसे हरनहार जपैं जाके नामै " हे मन इत्यादि सिद्धान्तों से श्रीरामनाम की महिमा जानकर अशंक जपाकर ॥

सत्यं ब्रवीमि देवेशि श्रुत्वेदमवधारय ॥ नामसंकीर्तनादन्यो मोचकोत्र न विद्यते ॥ १३ ॥

अब रहस्य संहिता पुराणादिकों में (३५)

पैंतीस श्लोकों से शिवजी श्रीनामयश कहते हैं। (ब्रह्मरहस्य में पार्वती प्रति एक श्लोक) हे पार्वति! हम सत्य कहते हैं तुम सुनकर यह बात अपने मन में धारण करो, इस संसार में श्रीरामनाम उच्चारण के बिना जीवों को भव-बंधन से छुड़ाने वाला और कोई भी नहीं है ॥ १३ ॥ यथा (कबित्त घनाक्षरी) रामनाम जाप बिन ताप त्रै न छूटती। ज्ञान औ विराग जोग जाग तप त्याग करैं सिद्ध भये तरैं माया बीचही में लूटती। तीरथ ब्रतादि दान साधना अनेक धरैं पचि मरैं चावल लहै न भूसी कूटती॥ भक्ति महारानी भव भानी जुक्ति जानी परैं ताहू में तो लालच लबारी आदि जूटती। शम्भु सिर सुरसरि धरि भनी "रंगमनी" राम

नाम जाप बिन ताप त्रै न छूटती ॥ १ ॥

दोहा।

कलितम नाशन हेतु सब, साधन ज्यों रवि चित्र।
रवि को रवि श्रीराम को, नाम प्रत्यच्छ पवित्र॥१॥

रामेति वर्णद्वयमादरेण सदा स्मरन्मुक्तिमुपैति जन्तुः॥ कलौ युगे कल्मषमानसानामन्यत्र धर्मे खलु नाधिकारः॥ १४॥

( ब्रह्मसंहिता में मुनियों के प्रति एक श्लोक )

श्री-राम इन दोनों वर्णों को सदा आदर समेत स्मरण करने से ही जीव मुक्ति को पावता है, कलियुग में पापों से ग्रसित मनवाले जीवों को और धर्मों में अधिकार ही नहीं है॥१४॥

( चौपाई )

नहिं कलि कर्म न भक्ति विवेकू ।
रामनाम अवलम्बन एकू ॥

**रामनाम सदा सेव्यं जपरूपेण नारद ॥ क्षणार्द्धों नामसंहीनः कालः कालाऽतिदुःखदः ॥ १५ ॥**

शिवपुराण में शिवजी कहते हैं हे नारदजी ! श्रीरामनाम की जपरूप सेवा सदा करना चाहिये, क्योंकि नाम के जप से रहित जो आधा क्षण भी काल बीतता है सो सर्व संहार काल से भी अधिक दुःख देनेवाला है ॥१५॥

( यथा कवित्त )

दिनु बिनु रामनाम दुख दीनता को धाम

जाम जम जातना सौं प्रहर प्रहार है। दंड काल दंड पल पीड़क उदंड क्षण क्षीणता को मंड जो न जपै नाम प्यार है॥ ज्ञान है अज्ञान त्यों कुयोग योग नाम हीन तप ताप पाप जाग कर्म आग छार है। रामअंक हीन सब सून्य रसरङ्गमणी नाम अङ्क सङ्ग सब दश गुनो सार है॥ १॥

**यन्नाम सततं ध्यात्वाऽविनाशित्वं परं मुने। प्राप्तं नामैव सत्यं च सुगोप्यं कथितं मया॥ १६॥**

हे नारद मुनिजी जिस श्रीरामनाम को निरन्तर ध्यान स्मरण करके हम अविनाशी पद को प्राप्त हुये हैं सो नामहीं सत्यरूप अर्थात्

ब्रह्म स्वरूप है यह अति गुप्त बात हम कहते हैं॥१६॥

यस्यामलं प्रिययशः सुयशो विधाता ताक्ष्यंध्वजश्च गिरिजे नितरान्तथाहम्॥ प्रेम्णा वदामि च शृणोमि सहैव ताभ्यां तद्रामनाम सकलेश्वरमादिदेवम्॥ १७॥

काशीखण्ड में शिवजी पार्वती प्रति कहते हैं। जिस प्रिय यशवाले श्रीरामनाम का सुन्दर यश ब्रह्माजी, तथा गरुडध्वज श्रीविष्णुजी, और हम उन दोनों के सहित प्रेम समेत कहते हैं और श्रवण करते हैं, सो श्रीरामनाम सर्वेश्वर आदिदेव अर्थात् अति प्रकाशमान् ब्रह्मस्वरूप हैं॥ १७॥

रामनामप्रभावेण ह्यविनाशिपदं प्रिये ॥ प्राप्तं मया विशेषेण सर्वेषां दुर्लभं परम् ॥ १८ ॥ अतस्सर्वात्मना रामनामरूपं स्मर प्रिये ॥ अनायासेन भोदेवि अमरीत्वं भविष्यसि ॥ १९ ॥

केदारखण्ड में शिवजी कहते हैं, हे प्रिये पार्वति श्रीरामनाम के प्रभाव से अविनाशी पद जो सबको अत्यन्त दुर्लभ था सो हम विशेष करके प्राप्त हुये ॥ १८ ॥ सब प्रकार से अर्थात मन बचन से श्रीरामनामस्वरूप का स्मरण करो जिस्से अनायास ही तुम अमर पद को प्राप्त हो जावोगी, अविनाशिनी हो जावोगी ॥ १९ ॥

प्राणात्प्रियतरं मह्यं रामनाम सदा प्रिये ॥ क्षणं विहातुं शक्तोस्मि नैव देवि कदाचन ॥ २० ॥

संमोहन तंत्र में शिवजी कहते हैं, हे प्रिये ! हमको श्रीरामनाम प्राण से भी अत्यंत प्रिय है, हे देवि हम कभी क्षणमात्र उनको त्यागने में समर्थ नहीं हैं ॥ २० ॥

दोहा ।

हम जीवैं याहि आसरे, सुमिरन के आधार ॥
दादू छुटकैं नामतें, हमको वार न पार ॥१॥

भवन्नामामृतं पीत्वा गीत्वा च भवतां यशः॥शिवोहं सर्वदेवैश्च पुजनीयो यादनिधे ॥ २१॥ निराकारञ्च साकारं

सगुणं निर्गुणं विभो ॥ उभौ विहाय सर्वस्वं तव नाम स्मराम्यहम् ॥२२॥

निर्वाणखण्ड विषे शिवजी कहते हैं।

हे दयानिधे श्रीरामजी हम आपके नाम रूपी अमृत को पीकर और आपका यश गानकर सब देवतों करके पूज्य शिव-कल्याणरूप हैं अर्थात् आपके नाम यश विना अशिव होजावैं ॥२१॥हेविभो-परम समर्थ आपके निराकारस्वरूप निर्गुण तथा साकाररूप सगुण, इन दोनों को छोड़ कर, हमारा तथा आपका सर्वस्व अर्थात् आपके निराकार साकार निर्गुण सगुण दोनों रूपों का प्रबोधानन्ददायक आपका जो श्रीरामनाम सो हम उसीको स्मरण करते हैं ॥२२॥

अहं भवन्नाम जपन् कृतार्थो वसामि काश्यामनिशं भवान्या ॥ मरिष्यमाणस्य विमुक्तयेहं दिशामि मन्त्रं तव रामनाम ॥ २३ ॥

अध्यात्मरामायण विषे शिवजी कहते हैं, हे प्राणप्रिय श्रीरामचन्द्रजी हम भवानी पार्वतीजी के समेत निरंतर आपका नाम जपते हुए कृतार्थ होकर काशी में वसते हैं और वहाँ के मरनेवाले जीवों को मुक्ति प्राप्ति होने के हेतु हम महामंत्र आपका रामनाम उपदेश करते हैं ॥ २३ ॥

अहं जपामि देवेशि रामनामाक्षरद्वयम् ॥ श्री सीतायाः स्वरूपस्य ध्यानं

कृत्वा हृदि स्थले ॥ २४ ॥

आदित्यपुराण विषे शिवजी कहते हैं, हे देवतों की ईश्वरी पार्वती हम राम इन दोही अनूप अक्षरों को जपते हैं परन्तु श्रीसीता सर्वेश्वरी के स्वरूप का ध्यान श्रीरामनाम के भीतरही अपने हृदय में करलेते हैं ॥ २४ ॥

नाम में श्री सीतास्वरूपवर्णन, कवित्त ।

व्यंजन मकार पद मध्यलौ सिया को वपु उरलौ अकार तेज तन अभिराम है। बिन्दु सानुनासिक मकार की पयद दोऊ, दीरघ अकार रा की बाहु शोभाधाम है॥ सीस सो स-नाद रेफ रमित अकार सोहै श्यामल विलोच सों रेफरूप राम हैं। याहि विधि जानत रसिक

रसरङ्गमणि ध्यावत जपत सीतारूप राम-
नाम है ॥ १ ॥

धिक्कृतं तमहं मन्ये सततं प्राण-
वल्लभे ॥ यज्जिह्वाग्रे न श्रीरामनाम सं-
राजते सदा ॥ २५ ॥

कूर्मपुराण विषे शिवजी कहते हैं, हे प्राण
वल्लभे-पार्वती ! जिस पापात्मा मनुष्य की जीभ
के अग्रभाग में अर्थात् स्वासा मन, चित्त की
स्मृति में भी श्रीरामनाम सर्वदा नहीं विराजते
अर्थात् उच्चारण स्मरण नहीं होते, उसको हमारे
मत से निरन्तर धिक्कार है ॥ २५ ॥

यथा श्री रघुनाथदासजीकृत, कवित्त ॥

धिक्कार धिक्कार धिक जन्म को पाय मन

राम के नाम को नाहिं जाना। गर्भ की बात बिसराय बेहोश होय मोहवश कियो रस विषय पाना॥ पाँच के आँच में नांच नांचत रह्यो सांच गुरु शब्द को नाहिं माना। दास रघुनाथ श्री जानकीनाथ के भजन विन नमक हाराम खाना॥१॥ रे मन हा ऐसे वचन सुनकर भी श्री रामनाम को भूल जाता है तब तुझको छोड़कर और किसको धिक्कार है॥

रामनामसु विज्ञेयाः षण्मात्रास्तत्त्वबोधकाः॥ जानन्ति तत्वनिष्णाता रामनामप्रसादतः॥ २६॥ रामनाम्नि स्थितो रेफो जानकी तेन कथ्यते॥ रकारेण तु विज्ञेयः श्रीरामः पुरुषोत्त-

मः ॥ २७ ॥ अकारेण तु विज्ञेयो भरतो विश्वपालकः ॥ व्यञ्जनेन मकारेण लक्ष्मणोऽत्र निगद्यते ॥ २८ ॥ ह्रस्वाकारेण निगमैः शत्रुघ्नः समुदाहृतः ॥ मकारार्थो द्विधा ज्ञेयः सानुनासिकभेदतः ॥ २९ ॥ प्रोच्यंते तेन हंसा वै जीवाश्चैतन्य विग्रहाः ॥ संसारसागरोत्तीर्णाः पुनरावृत्तिवर्जिताः ॥ ३० ॥ सेवाधिकारिणः सर्वे श्रीरामस्य परात्मनः ॥ एतत्तात्पर्यमुख्यार्थादन्यार्थो योनुभूयते ॥ ३१ ॥ सोऽनर्थ इति विज्ञेयः संसारप्राप्तिहेतुकः ॥ तस्मात्तात्पर्य्यमर्थं च

मंतव्यं नामतन्मयैः ॥ ३२ ॥

शिवरहस्य विषे शंकरजी कहते हैं, श्रीरामनाम में तत्व पदार्थ की बोध करने वाली छः मात्रा हैं उनको जो यथार्थ रहस्य केज्ञान में प्रवीण हैं ते श्री रामनाम के प्रसाद से जानते हैं ॥ २६ ॥ श्रीरामनाम में स्थित जो रेफ है सो श्रीजानकीजी का स्वरूप है। और रेफ मिलित जो अकार है सो श्रीराम पुरुषोत्तम का रूप जानना योग्य है ॥ अतएव श्रीसीतारामजी से तत्वतः अभेद है ॥ २७ ॥ रकार का जो दीर्घ अकार है सो सब विश्व के पालन करने वाले श्रीभरतजी का स्वरूप है। अकार छोड़कर जो मकार का ( म् ) व्यंजन है सो श्रीलक्ष्मणजी का स्वरूप कहा जाता है ॥२८॥

और व्यंजन मकार मिलित जो ह्रस्व अकार है सो वेदों ने शत्रुध्न जी का स्वरूप कहा है ॥ वर्णों में दो भेद हैं सानुनासिक और निरनुनासिक, यहां मकार सानुनासिक है ॥ २९ ॥ मकार में जो ( मँ ) चन्द्र बिन्दु उच्चारण होता है सो शुद्ध हंसस्वरूप जीव समूह कहे जाते हैं जो जीव चैतन्य विग्रह नित्य मुक्त संसारसागर के पार हैं वे कभी इस लोक में आयके जन्म नहीं लेते ॥ ३० ॥ सब पारायोध्या नित्य धाम में परमात्मा श्रीरामचन्द्रजी के सेवा के अधिकारी हैं अर्थात् हनुमदादिक मुख्य पार्षद एक स्वरूप से नित्य परधाम में प्रभु की सेवा करते हैं और इस लोक में भी प्रभु की नांई सर्वत्र रहते हैं, श्रीरामनाम का यह मुख्य तात्पर्य

अर्थ है इससे अन्य जो अर्थ अपने मन में अनुभव करते हैं ॥ ३१ ॥ सो अनर्थ है भाव केवल काम क्रीड़ादिक ही में रमु क्रीड़ा का अर्थ मानना अनर्थ है, वह संसार में जन्म मरण प्राप्ति का हेतु है। इससे जिनके मन वचन श्रीरामनाममय हो रहे हैं तिनको इस तात्पर्य्य अर्थ का मनन करना ही अति उचित है ॥ ३२ ॥

रेफ रूपिणी श्रीजानकीजी का रूपवर्णन (सवैया)

सोन सो सुन्दरताई ससी-सितलाई सोहाई प्रभा अमली की। दामिनि ओप "मणीरस-रङ्ग" मृदुल सुगंधिहुँ चंपकली की। कल्प-लता सी लसै लहरानि अनूपम लाल तमाल रली की। ज्यों छवि गेह सनेह की दीप दियै

द्युति देह विदेहलली की ॥ १ ॥

ह्रस्व अकार मय श्रीराम रूप वर्णन ( कवित्त )

श्यामल कलेवर मै जेवर जड़ाऊ सोहैं कटि तट किंकिनी सुरट त्यों पुरट की । नाभि की निकाई उर लम्बबाहु कंबु कंठ कहै कौन शोभा मति भारती की भटकी ॥ सीसपै मुकुट छटा छावै रसरङ्ग मणी मैनबाण अनी-नैन भौंह चाप लटकी । जोहत सुजान जानकीशजूकी मुसुक्या-नि तजिकै जाहान मेरी जान जाय अँटकी ॥२॥

( श्रीसीताराम अभेद में कवित्त )

राम-मन सीता-मन सीता-मन राम-मन सीताराम नैनकिये सीताराम धाम हैं। राममति सीतागति सीतामति रामगति सीताराम वैन रामसीता के आराम है ॥ रामजी को स्वारथ सो

सिया परमारथ है सिया अभिलाष लाख भाँति राम काम है । स्वाद रस एकही सुजैसे रसरङ्ग-मणी तैसे दुइ नाम रूप एक सीताराम हैं ॥३॥

( दीर्घ अकारमय श्रीभरत रूप वर्णन क० )

श्याम सुकुमार रामचन्द्र ही की अनुहार हार मुकुटादि सोहैं पीत पटछोर हैं । चारु चन्द्र आनन सरोज नैन सिंहकंध धारे धनु तीर महावीर बाहु जोर हैं । राजैं दृग अग्रज की ओर साभिलाषैं मंजुभाषैं रसरङ्गमणी चाखैं कृपा कोर हैं । राम संग भ्राजैं लिये चामर भरे सनेह शील शिरमौर भैया भरत किशोर हैं ॥ ४ ॥

( अकार रहित मकार मय श्रीलक्ष्मण स्वरूप वर्णन कवित्त )

वीर शिरमौर गौर गात उमगात शोभा

तूणबंध धनुकंध सुभुज विशाल हैं। लोचन रसाल कान कुंडल किरीट भाल तिलक अलक पट लाल उर माल है॥ राघव कृपाल सों सुनावत सबै की हाल "रसरङ्ग" बंधु दुख दलन दयाल हैं। धारे छत्र दंपती के पीछे में तिरेछे कछू लोने लाल लाड़िले लखन जनपाल हैं॥ ५॥

( मकार की अकारमय श्रीशत्रुघ्न स्वरूप वर्णन कवित्त )

वपुष लखन अनुहारे "रस राम" प्यारे भूषण किरीट कुंडलादि सब धारे हैं। नैन अनियारे मैन मोहत निहारे मुख सुखमा पै वारे सोम कैयक हजारे हैं॥ भुजबल भारे शर धनुष सम्हारे अङ्ग सुखमा अपारे रूप शील उजियारे हैं। सीताराम माण्डवीश सेवा सों सुखारे सदा

वीजत व्यजन शत्रुसूदन दुलारे हैं ॥ ६ ॥

( मकार की सानुनासिक बिन्दुमय श्रीराम पार्षद् मुख्य हनुमत् स्वरूप वर्णन कवित्त )

महाशंभु कारण कटाक्षहीं ते कोटि रुद्र करैं ज्यों समुद्रहीं ते सीकर अपार हैं। सोहैं स्वर्ण अङ्ग पै सुरङ्ग पट लोनी लट कुंडल मुकुट कटकाङ्गदादि हार है ॥ आगे अनुरागे प्रीति पागे प्रिया प्रीतम के कहैं गुन गाय वहैं नैन नीर धार हैं। सीतारामचन्द्र के चकोर चारु शील मणि रसरंग हनुमंत संतन आधार हैं ॥ ७ ॥

शृणुष्व परमं गुह्यं यन्न जानन्ति केपिच॥ केपि केपि विजानन्ति रामानुक्रोशतः प्रिये ॥३३॥ तेजोरूपमयो

रेफो श्रीरामाम्बककंजयोः ॥ कोटि-
सूर्यप्रतीकाशःपरं ब्रह्मस उच्यते ॥३४॥
सोपि सर्वेषु भूतेषु सहस्रारे प्रतिष्ठितः॥
सर्वसाक्षी जगद्व्यापी नित्यं ध्यायन्ति
योगिनः ॥ ३५ ॥

महारामायण में शिवजी कहते हैं, हे प्रिये
पार्वति! श्रीरामनाम का परम गुप्त अर्थ सुनो
कि जिसको कोई नहीं जानते, श्रीरामकृपा
से कोई कोई हम सरीखे ही जानते हैं ॥३३॥
यहां श्रीरामरूप ही श्रीरामनाम को जनावते
हैं, श्रीरामनयनकमलों का तेजोरूपमय
रेफ कोटिन सूर्य सम प्रकाशमान सो परब्रह्म
कहा जाता है ॥ ३४ ॥ सोई सब प्राणियों के

मस्तक में सहस्त्रदल के कमल विषे विराजमान सबों का साक्षी जगद्व्यापी है उसी को योगी जन ज्योतिरूप सदा ध्यान करते हैं ॥ ३५ ॥

रामस्य मण्डलस्यैव तेजोरूपं वरानने ॥ कोटिकंदर्पशोभाढ्यो रेफाकारो हि विद्धि च॥अकारस्सोपि रूपश्च वासुदेवस्स कथ्यते॥ मध्याकारो महारूपः श्रीरामस्यैव वक्षसः ॥ ३७ ॥ सोप्याकारो महाविष्णुर्बलवीर्य्यस्वरूपकः ॥ सर्वेषामेव भूतानामाधारस्त्वश्च विद्धि सः ॥ ३८ ॥

हे श्रेष्ठमुखवाली पार्वती, सुखशोभाधाम

श्रीरामचन्द्रजी के मुखमण्डल का तेजोरूप कोटिन कामसम शोभायुक्त रफे का ह्रस्वाकार जानो ॥ ३६ ॥ सोई अकार वासुदेव रूप कहा जाता है, और रकार मकार के मध्य का अकार महारूपवान् श्रीरामजी के वक्षस्थल का तेज है ॥ ३७ ॥ सो भी अकार बल वीर्य्य स्वरूपी महाविष्णु हैं सब भूतों के आधार इन ही को जानो ॥ ३८ ॥

मस्याकारो भवेद्रूपं श्रीरामकटिजानुनी ॥ सोऽप्यकारो महाशंभुरुच्यते यो जगद्गुरुः ॥ ३९ ॥

मकार का अकार श्रीरामजी के कटि से जानु आदि अङ्गों का रूप अर्थात् तेज है

सोई अकार श्रीराम भक्तिमार्गोपदेष्टा जगद्गुरु महाशंभुजी कहावते हैं ॥ ३९ ॥

इच्छाभूतश्च रामस्य मकारं व्यञ्जनञ्च यत् ॥ सा मूलप्रकृतिर्ज्ञेया महामायास्वरूपिणी ॥ ४० ॥

मकार का जो व्यंजन है ( म् ) सो श्रीरामजी की इच्छा रूप है सो इच्छा महामायास्वरूपिणी मूलप्रकृति जानना चाहिए ॥४०॥ इस प्रकार श्रीरामनामही के भीतर सूक्ष्मरूप से परब्रह्म, वासुदेव, महाविष्णु, महाशंभु, महामाया, सब विराजमान हैं जो मन स्थिर करके प्रीतिपूर्वक जपै तौ सब प्रकाशमान होते हैं,

( विनय पद )

भलो भली भाँति है जो मेरे कहे लागिहै। मन रामनाम सों सुभाय अनुरागिहै॥ रामनाम कामतरु जोई जोई माँगिहै। तुलसिदास स्वारथ परमारथ न खाँगिहै॥ (बरवै) तुलसी रामनाम सम मित्र न आन। जो पहुँचाव राम-पुर तन अवसान॥

अहो भाग्यमहो भाग्यं कलौ तेषां सदाशिवे॥ येषां श्रीरामनाम्नस्तु नियमः समखण्डितः॥ ४१॥

अत्रिसंहिता विषे शिवजी कहते हैं, हे शिवे-कल्याणरूपिणि! कलियुग विषे उन अनुरागियों का अति आश्चर्य महाभाग्य है

कि जिनका श्रीरामनाम के जप का नियम कभी खंडित नहीं होता एकरस चला जाता है ॥४१॥

**रामभद्रं परित्यज्य योन्यदेवमुपासते ॥ कुम्भीपाके महाघोरे पच्यते नात्र संशयः ॥ ४ ॥**

लोमशसंहिता विषे शिवजी कहते हैं । मेरे स्वामी श्रीरामभद्रजी को त्यागि कै जो मूढ़ और देवतों की उपासना करता है सो महाघोर कुंभीपाक नरक में डारके महादुःखाग्नि में चुराया जाता है इसमें संशय नहीं है ॥४२॥

दोहा ।

तुलसी रामहिं छांड़िकै करै और की जाप ।
ताके मुख में मेलिये नौसादर के बाप ॥ १ ॥

( श्रीस्वामि अग्रदास वचनात् कुण्डलिया छन्द )
भूस उपर को लेपनो अरु बालू की भीति ।
अरु बालू की भीति भूत की मनहु मिठाई ॥
बाजीगर को बाग स्वप्न में नवनिधि पाई ।
अजया अस्तन कंठ तुच्छ बादर की छाया ॥
पूरब वस्तु बिसारि पच्छिम में ढूंढ़न धाया ।
आन उपासक राम बिनु अग्रसो ऐसी रीति ॥
भूस उपर को लेपनो अरु बालू की भीति ॥१॥

रामेति द्व्यक्षरं नाम यत्र संकीर्त्यते बुधैः ॥ तत्राविर्भूय भगवान् सर्वदुःखं विनाशयेत् ॥ ४३ ॥

राम यह दो अक्षर का नाम जहां सुबुद्धि युक्त जन संकीर्तन करते हैं तहांपर भगवान्

श्रीरामचन्द्रजी प्रगट होकर सब दुःख विनाश कर देते हैं ॥ ४३ ॥

दैवाच्छूकरशावकेन निहतो म्लेच्छो जराजर्जरो हा रामेण हतोऽस्मि भूमिपतितो जल्पंस्तनुं त्यक्तवान् ॥ तीर्णो गोष्पदवद्भवार्णवमहो नाम्नः प्रभावात्पुनः किं चित्रं यदि रामनामरसिकास्ते यान्ति रामास्पदम् ॥ ४४ ॥

एक ( म्लेच्छ ) यवन बुढ़ापा से अतिजर्जर दैव योग से अर्थात् दिशा के अर्थ गया था उसको शूकर के बच्चा ने धक्का मारा वह गिरपड़ा और अपने भाषा में पुकारने लगा कि मुझे हराम ने मारा हराम हराम कहते ही तन त्यागकर

प्रेमतः शिवे ॥ दृष्ट्वा तद्वदनं पुण्यं सुगमं शाश्वतं सुखम् ॥४५॥ असंख्य-कोटिनामानि नैव साम्यं प्रयान्तिच ॥ खद्योतराशयो यान्ति रवेः सादृश्यतां कथम् ॥ ४६ ॥

प्रेमरामायण विषे शिवजी का वचन है। जिसके मुख में सर्वदा प्रेमसहित श्रीरामनाम वर्त्तमान है, तिस्का परम पुण्य मुख देखने से निरंतर सुख सुगम मिलता है ॥ ४५ ॥ प्रभु के असंख्य कोटि नाम हैं ते सब एकत्र होकर श्रीराम नाम की समता को नहीं पावते, कैसे कि जैसे असंख्य जुगनू की राशि कैसहूं सूर्य्य सम नहीं हो सकती ॥ ४६ ॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे॥
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ४७

पद्मपुराण विषे शिवजी पार्वती से कहे हैं, हे श्रेष्ठमुखवाली पार्वती, राम राम राम यह स्मरण करने से विष्णुसहस्रनाम के तुल्य होता है॥ ४७॥

( कवित्त घनाक्षरी )

रामनाम हरि के सहस्र नाम सम है। राम नाम प्रणव को कारण उचारण ते तारण करण भव उदधि अगम है। रेफ औ अकार त्यों मकार विधि हरि हर त्रिगुण कौ हेतु आप अगुण परम है॥ बीज वन्हि भानु शशि मन मल मोह तम नासिकै प्रकासै सूख सीत

अनुपम है। शिवा को सुनायो शिव महा मन्त्र "रसराम" रामनाम हरि के सहस्र नाम सम है ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

सहस नाम सम सुनि शिव वानी ।
जपि जेईं पिय संग भवानी ॥

अहं च शंकरो विष्णुस्तथा सर्वे दिवौकसः॥ रामनामप्रभावेण संप्राप्ताःसिद्धिमुत्तमाम् ॥ ४८ ॥

श्रीविष्णुपुराण विषे ब्रह्माजी कहते हैं ॥ हम ( ब्रह्मा ) और शंकरजी तथा श्रीविष्णुजी और इन्द्रादिक सब देवता, श्रीरामनाम के भजन स्मरण के प्रभाव ही से उत्तम सिद्धियाँ

अर्थात् हम जगत् उत्पन्न करने की सिद्धि, शिवजी संहार करने की, श्रीविष्णुजी पालन सिद्धि, और सब देवता इन्द्र चन्द्र सूर्य्यादि, निज निज अधिकार रूपा सिद्धि को प्राप्त हुए हैं॥४८॥

**प्रमादादपि संस्पृष्टो यथानलकणोदहेत्॥**
**तथौष्ठपुटसंस्पृष्टं रामनाम दहेदघम्॥४९**

ब्रह्माण्डपुराण विषे ब्रह्माजी का वचन है, जैसे अग्नि का चिनगा भूल कर भी स्पर्श करने से हाथ को जलाय देता है, तैसे श्री रामनाम भूलके भी ओष्ठ को स्पर्श करके मुख से निकलने से पापों को जलायकर नाश ही कर देता है यह सिद्धान्त है॥ ४९ ॥

**रामनामजपादेव भासकोहं विशे-**

षतः ॥ तथैव सर्वलोकानां क्रमणे शक्तिमानहम् ॥ ५० ॥

आदित्यपुराण विषे सूर्य्य भगवान् मुनियों प्रति कहते हैं, कि हम श्रीरामनाम के जप के प्रभाव ही से सब लोक के विशेष प्रकाशक हैं, और साठ दंड ही में सब लोक को घूमि आने में शक्तिवान् हैं ॥ ५० ॥

ससागरां महीं दत्वा शुद्धकाञ्चनपूर्णिताम् ॥ यत्फलं लभते लोके नामोच्चारस्ततोऽधिकः ॥ ५१ ॥

सौरसंहिता विषे सूर्य्य ही का वचन है, कि सब समुद्रों से सहित शुद्ध सुवर्ण से पूर्ण पृथिवी सुपात्र को दान देने से लोक में जो फल

प्राप्त होता है, उससे भी अधिक फल श्रीराम नाम उच्चारण करने से होता है ॥ ५१ ॥ क्योंकि दानादि में किंचित् भी व्यतिक्रम हो जाय तो नृग आदि ऐसे दानियों को नीच योनि मिलती है ॥

## कवित्त।

रटैं नहीं नाम सो विशेष वीटकीट है ॥ जीवत मृतक ताते जानि न परत पीर अंतक सदन जाय अंत शिर पीटहै। कहैं हम पंडित प्रवीन सभा जीते बहु रटै विना राम पढ़े पाथर औ ईंट है॥ दान अभिमान सातौ अति हीन दानपन नृग के समान नृप दानी गिरगीट है। युगल अनन्य सब फोकट धरम लखु रटै

नहीं नाम सो विशेष वीटकीट है ॥ १ ॥

( वीट-कीट कही विष्टा का कीड़ा )।

अहं पूज्योऽभवँल्लोके श्रीमन्नामानुकीर्तनात् ॥ अतश्श्रीरामनाम्नस्तु कीर्तनं सर्वदोचितम् ॥ ५२ ॥

गणेशपुराण विषे गणेशजी का वचन मुनियों के प्रति है। श्रीमान् नाम के अनुकीर्तन प्रदाक्षिण करने से हम सब लोक में प्रथम पूजनीय भए, इससे आप लोगों को श्रीरामनाम कीर्तन करना सर्वदा उचित है। तात्पर्य्य नाम कीर्तन से आप भी पूज्य होवोगे ॥ ५२ ॥

शृणुध्वं भो गणास्सर्वे रामनाम परं

बलम्॥ यत्प्रसादान्महादेवो हालाहल-
मपीयत ॥ ५३ ॥

नन्दीपुराण विषे नन्दीश्वर का वचन है समस्त शिवगणों के प्रति, हे समस्त शिवगण लोगों सुनो, श्रीरामनाम का परम बल है कि जिसके प्रसाद से महादेवजी महाविष हालाहल को पान कर पचाय गए। भाव जिस नाम को तुम्हारे स्वामी जपते हैं तिसको तुम सब भी जपो ॥ ५३ ॥

चौपाई।

नाम प्रभाव जान शिव नीके।
कालकूट फल दीन अमीके ॥

वयं सदा नामसुहृद्गुणेरतास्तथैव

तज्जापकपादसेवकाः ॥ प्रभावतो यस्य हरीशपद्मजाः कुर्वंति विश्वस्थितिसंयमोद्भवम् ॥ ५४ ॥

गार्गीयसंहिता विषे धर्मराजजी कहते हैं, हे दूतों! सुनो हम सब, जिनका श्रीरामनाम ही मित्र है तिन सज्जनों के गुणों को गावते हैं और श्रीराम नाम जापक के चरणकमलों की सेवा करते हैं, और उन्ही श्रीरामजीके प्रभाव से हरि हर ब्रह्मा पालन प्रलय उत्पत्ति करते हैं। रे मन देख ऐसे समर्थ श्रीरामजी को मत भूले ५४

हे जिह्वे जानकीजानेर्नाम माधुर्यमण्डितम् ॥ भजस्व सततं प्रेम्णा चेद्वाञ्छसि हितं स्वकम् ॥ ५५ ॥ जिह्वे

श्रीरामसंलापे विलम्बं कुरुषे कथम् ॥ व्रीड़ा नायाति ते किंचिद्विना श्रीनाम सुन्दरम् ॥ ५६ ॥

हनुमत्संहिता विषे श्रीहनुमानजी कहते हैं, हे रसने ! महामाधुर्य्य रस से भूषित श्रीजानकी-पति का नाम तुम प्रेमपूर्वक सदा भजो जो अपने हित को चाहती हो तो ॥ ५५ ॥ हे रसने श्रीराम नाम उच्चारण करने में विलम्ब क्यों करती है, श्रीरामनाम सुन्दर के विना शून्य रहने में तुझे कुछ भी लाज नहीं आती ॥ ॥ ५६ ॥ ( पद विनयपत्रिका का ) राम राम राम जीह जौलौं तू न जापि है । तौलौं तू कहूं जाइ तिहूं ताप तापि है ॥ सुरसरितीर बिनु

नीर दुख पाइ है। सुरतरुतर तोहिं दारिद सताइ है॥ जागत बागत सुख सपने न सोइहै। जनमि जनमि युग युग जग रोइहै॥ छूटिबे कि यतन विशेषि बाँध्यो जाइगो। ह्वैहै विष भोजन जो सुधा सानि खाइगो। तुलसी विलोक तिहूं काल तोसे दीन को। रामनाम ही कि गति जैसे जल मीन को॥ १॥

रामनामात्मकं मन्त्रं यंत्रितं येन धारितम्॥ तस्य क्वापि भयं नास्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥ ५७॥

श्रीरामनाम यह महामंत्र का यंत्र बनाय के जो कंठ में धारण करते हैं तिनको लोक परलोक में कहीं भी भय नहीं है, हम सत्य सत्य कहते हैं॥ ५७॥

रामनामाङ्किता मुद्रा प्रत्यङ्गं येनवै धृता ॥ आबद्धं तेन कवचं मोहशत्रु चमूजये ॥ ५८ ॥

आदिरामायण विषे हनुमान्‌जी नलजी के प्रति कहते हैं ॥ श्रीरामनाम करिकै अङ्कित मुद्रा जिस भक्त ने अपने प्रत्यङ्ग में अर्थात् भाल में तिलक के दोनों ओर तथा बाहु वक्ष स्थल में धारण किया तिसने मोह शत्रु की सेना जीतने को कवच (बख़्तर) ही पहिरा है। अर्थात् देह में श्रीरामनाम मुद्रा ( छाप ) रूप कवच पहिर के रसना से नाम रटनरूप बाणों से मोह शत्रु को मारलेगा ॥ ५८ ॥

श्रीरामनामस्मरणात् सीतारामो

**ममोपरि ॥ कृपामहैतुकीं नित्यं चक्रे सर्वोत्तमाम्मुने ॥ ५९ ॥**

हनुमत्संहिता विषे श्रीहनुमान्‌जी अगस्त्य मुनिजी से कहते हैं। हे मुनिजी श्रीरामनाम स्मरण करने ही से श्रीसीतारामचन्द्र युगल कृपालजी ने मेरे ऊपर नित्य अकारण अनूप कृपा की है। भाव से कृपाभिलाषियों को नाम-स्मरण अवश्य करना चाहिए ॥ ५९ ॥

**यस्तु स्वप्ने वदेद्रामं सम्भ्रमस्खल-नादिषु ॥ तस्य पादरजो मे तु मूर्द्धान-मधिरोहतु ॥ ६० ॥**

सदाशिवसंहिता में श्रीहनुमान्‌जी अग-स्त्यजी से कहते हैं। जो कोई स्वप्न में वा

किसी घबराहट में अथवा गिरते समय भूलकर भी श्रीरामजी का नाम कहता है तिस्के चरण की धूरि, हमारे हाथों से हमारे माथ में चढ़ती है ॥ ६० ॥ दोहा ॥ तुलसी जाके सुमुखते धोखेहुँ निकसत राम ॥ ताके पगकी पानहीं मेरे तन को चाम ॥ १ ॥ जेहि मुख धोखेहुँ राम कह तेहि मुख देउँ कपूर ॥ "पल्टू" ताके नफ़रकी हौं पनहीं को धूर ॥ २ ॥

इदं शरीरं शतसंधिजर्जरं पतत्यवश्यं परिणामदुर्वहम् ॥ किमौषधं पृच्छसि मूढ़ दुर्मते निरामयं रामरसायनं पिब ॥ ६१ ॥

श्रीहनुमान्जी किसी आर्त्त मुमुक्षु से

कहते हैं, यह शरीर सैकड़ों ठिकाने में जुड़ा है, और षटविकारयुक्त जर्जर है, परिणाम में इसका धारण करना दुःखरूप है, इससे अवश्य छूट जायगा, हे मूढ़ दुर्मति इसका क्या औषध पूछता है, निरामय कहो जन्म मरणादि दुःख रोगों से रहित करनेवाला श्रीरामनाम रसायन पान करके अमर क्यों नहीं हो जाता ॥ ६१॥

ये जपन्ति सदा स्नेहान्नाम माङ्गल्यकारणम् ॥ श्रीमतो रामचन्द्रस्य कृपालोर्मम स्वामिनः ॥६२॥ तेषामर्थं सदा विप्र प्रयतोहं प्रयत्नतः ॥ ददामि वांछितं नित्यं सर्वदा सौख्यमुत्तमम् ॥ ६३ ॥

श्रीहनुमान्‌जी कहते हैं, जो जन परम कृपाल मेरे स्वामी श्रीमान् रामचन्द्रजी का महामङ्गलों का देनेवाला नाम स्नेह समेत सदा जपते हैं ॥६२॥ उन जनों के अर्थ हम सदा एकाग्र प्रयत्नयुक्त रहते हैं, उनको नित्य मनवांछित उत्तम सुख सर्वदा देते हैं ॥ ६३ ॥ इति श्री हनुमद्वचनानि ।

**रामनामाशयं दिव्यं ये जानन्ति समादरात् ॥ ते कृतार्थाःकलौ राजन् सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥ ६४ ॥**

ब्रह्मवैवर्तपुराण विषे अम्बरीषजी से श्रीनारद जी कहते हैं। हेराजन् श्रीरामनाम का दिव्य आशय अर्थात अन्तरीय-अर्थ गुण प्रताप वैभव

जो जन आदरपूर्वक जानते हैं, ते कलिकाल में कृतार्थरूप हैं, हम सत्य सत्य कहते हैं ॥

चौपाई ।

चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ ॥
कलि विसेष नहिं आन उपाऊ ॥ ६४ ॥

रामनामपरा ये च नामकीर्तनतत्पराः ॥ नाम्नः पूजापरा ये वै ते कृतार्था न संशयः ॥ ६५ ॥ तस्मात्समस्तलोकानां हितमेव मयोच्यते ॥ रामनामपरान्मर्त्यान्न कलिर्बाधते क्वचित् ॥ ६६

बृहन्नारदीयपुराण में श्रीनारदजी कहते हैं, जो जन सर्वथा श्रीरामनाम ही में परायण हैं और नाम ही के कीर्त्तन में तत्पर हैं, तथा

श्रीरामनाम ही की पूजा करते हैं अर्थात ताम्र में वा चन्दनादि से लिखित नाम की तथा नामानुरागी की पूजा करते हैं ते जन कृतार्थरूप हैं इसमें संशय नहीं है ॥ ६५ ॥ इससे हम संपूर्ण लोगों का हित कहते हैं, कि श्रीरामनाम में परायण मनुष्यों को कलिकाल कभी नहीं बाधा करता, भाव जिस्को कलिकाल की बाधा से मुक्त होकर श्रीरामधाम जाना होवै सो श्रीरामनाम में परायण होवै ॥ ६६ ॥ (पद विनय का) रुचिर रसनाहू रामराम रटत। सुमिरत सुख सुकृत बढ़त अघ अमंगल घटत ॥ विनु श्रम कलि कलुष जाल कटु कराल कटत। दिनकर के उदय जैसे तिमिर तोम फटत ॥ योग याग जप विराग तप सुतीर्थ अटत।

बाँधिवे को भवगयन्द रेणु की रजु वटत ॥ परि-
हरि सुरमणि सुनाम गुंजा लखि लटत ।
लालच लघु तेरी लखि तुलसी तोहिं हटत ॥१॥

सकृदुच्चारयन्त्येतद्रामनाम कलौ युगे ॥ ते कृतार्था महात्मानस्तेभ्यो नित्यं नमो नमः ॥ ६७ ॥

श्रीनारदजी कहते हैं, जो जन कलि काल में एक वार भी श्रीराम नाम उच्चारण करते हैं ते महात्मा कृतार्थरूप हैं उनको नित्य ही मेरा नमस्कार है ॥ ६७ ॥

न्यूनातिरिक्तात् कर्माणि विफलानि कलौ युगे ॥ सफलानि भवन्त्येव राम-नामानुकीर्तनात् ॥ ६८ ॥

कलियुग में शुभ कर्म करते में न्यूनातिरिक्त अर्थात् क्रमबढ़ हो जाते हैं इस्से फल नहीं देते, सो उन कर्मों के अंत्य में श्रीरामनाम संकीर्तन करै तो अवश्य संपूर्ण फल देते हैं ॥६८॥

सीतारामात्मकं नाम सुधाधाम निरन्तरम् ॥ ये जपन्ति सदा भक्त्या तेषां किंचिन्न दुर्लभम् ॥ ६९ ॥

सीताराम ऐसा नाम अमृत का धाम जो जन भक्ति प्रीति सहित निरन्तर जपते हैं तिन को लोक, परलोक के कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं, सब मिलते हैं ॥ ६९ ॥

स्मरणात्कीर्तनाच्चैव श्रवणाल्लेख-नादपि ॥ दर्शनाद्धारणादेव रामनामा-

खिलेष्टदम् ॥ ७० ॥

श्रीरामनाम, मनसे स्मरण, श्रवण, मुखसे कीर्तन, लेखन, लिखे ललिताक्षर नाम का दर्शन, चन्दन से मुद्रा धारण तथा अष्टगंध से भूर्जपत्र में लिखके यंत्रात्मक धारण करने से सब मनोर्थ देनेवाला है ॥ ७० ॥

दोहा।

लिखत पढ़त सुमिरत गुनत गावत सुनत सप्रेम।
रामनाम रसरङ्ग मणि मुक्ति भुक्तिप्रद छेम ॥१॥

अहो चित्रमहोचित्रमहोचित्रमिदं द्विजाः ॥ रामनाम परित्यज्य संसारे रुचिरुत्तमा ॥ ७१ ॥

सिद्धान्त रहस्य विषे ब्राह्मणों से श्रीनारद

जी कहते हैं। यह बड़ा विस्मय का आश्चर्य्य है बड़ा ही आश्चर्य्य है अति ही आश्चर्य्य है कि श्रीरामनाम ऐसा मोद धाम को छोड़कर लोग, दुःखरूप संसार में अतिरुचि करते हैं और दुःख ही पावते हैं॥ ७१॥

### विनय पद।

रामनाम छांड़ि जो भरोसो करै और रे। तुलसी परसो त्यागि मांगै कूर कौर रे॥ वेदहू पुराणहू पुरारिहू पुकारि कह्यो नाम प्रेम चारि फलहू को फरु है। ऐसे राम नाम सो न प्रीति न प्रतीति मन मेरे जान जानिवो सोई नर खरु है॥ (खरु कहीं गदहा को)

सर्वेषां साधनानां च संदृष्टं वैभवं मया॥

परन्तु नाममाहात्म्यकलां नार्हति षोडशीम् ॥ ७२ ॥

नारदीय पुराण विषे नारदजी कहते हैं, हे व्यासजी हमने सब शुभ साधनों का वैभव विचार कर देखा परन्तु श्रीरामनाममाहात्म्य के सोरहवें हिस्सा को सब साधन नहीं पा सकते ॥ ७२ ॥

दोहा।

नामराम को अंक निधि, साधनता सब सून ॥
अंक गए कछु हाथ नहिं, अंक सहित दस गून ॥१॥
राम रसायन पान करु, परिहरु अपर भरोस ॥
युगलानन्य विकार वन, बीच न करु परितोस ॥२॥

राममनामसमं चान्यत्र साधनं प्रवद-

न्ति ये ॥ ते चाण्डालसमाः सर्वे सदा रौरववासिनः ॥ ७३ ॥

ब्रह्मवैवर्त पुराण में नारदजी कहते हैं, हे राजन् अम्बरीषजी श्रीरामनाम के समान जे और साधन उपाय को भी कहते हैं ते चाण्डाल के सम हैं उनको सदा रौरव नरक के वासी जानना ॥ ७३ ॥

अनन्यगतयो मर्त्या भोगिनोपि परन्तपाः ॥ ज्ञानवैराग्यरहिता ब्रह्मचर्य्यादिवर्जिताः ॥ ७४ ॥ सर्वोपायविनिर्मुक्ता नाम मात्रैकजल्पकाः ॥ जानकीवल्लभस्यापि धाम्नि गच्छन्ति सादरम् ॥७५॥ दुर्लभं योगिनां नित्यं

स्थानं साकेतसंज्ञकम् ॥ सुखपूर्वं ल-
भेत्तत्तु नामसंराधनात्प्रिये ॥ ७६ ॥
पद्मपुराण विषे श्रीशिव पार्वती सम्बाद के श्लोक,
नारद जी कहते हैं, जे मनुष्य भोगों में आसक्त
भी हैं, और अपर लोगों को दुःख भी देते हैं,
ज्ञान वैराग्य से रहित ब्रह्मचर्य्यादि से विवर्जित
॥ ७४ ॥ भगवत्प्राप्त होने के सब उपायों से
हीन भी हैं, परन्तु नामानन्य होकर सदा श्री
रामनाम मात्र ही जपते हैं ते जन आदर
सहित श्रीजानकीवल्लभ श्रीरामचन्द्रजी के
धाम को जाते हैं ॥ ७५ ॥ हे प्रिये पार्वती जे
श्रीरामनाम का सुन्दर आराधन करते हैं ते
योगी लोगों को भी दुर्लभ पराऽयोध्या साकेत
संज्ञक नित्य स्थान को सुखपूर्वक प्राप्त होते

हैं ॥ ७६ ॥ इन श्लोकों का तात्पर्य्य यह है कि जे अनन्य होकर नाम में लगेंगे तिनसो बुराई होगी नहीं कदाचित् प्रारब्ध बस होजाय तो श्रीरामकृपा से शान्त हो जाती है क्योंकि नाम का बड़ा प्रताप है ॥

रामनामरता नारी सुतं सौभाग्य-मीप्सितम् ॥ भर्तुः प्रियत्वं लभते न वैधव्यं कदाचन ॥ ७७ ॥ पतिव्रता-नां सर्वासां रामनामानुकीर्तनम् ॥ ऐहिकामुष्मिकं सौख्य दायकं सर्वशो मुने ॥ ७८ ॥

नृसिंह पुराण विषे नारदजी कहते हैं, हे याज्ञवल्क्यजी, श्रीरामनाम में अति प्रीति करने

वाली भक्ता नारी पुत्र औरमनवांछित सौभाग्य तथा अपने पति की प्रीति को प्राप्त होती है, और विधवा कभी नहीं होती ॥ ७७ ॥ संपूर्ण पतिव्रता स्त्रियों को श्रीरामनाम का कीर्त्तन (ऐहिक) इस लोक का सुख तथा (आमुष्मिक) परलोक का सुख सब प्रकार से देनेवाला है ॥ ७८ ॥

सीतया सहितं रामनाम येषां परं प्रियम् ॥ तएव कृतकृत्याश्च पूज्याः सर्वे सुरेश्वरैः ॥ ७९ ॥

सीता सहित रामनाम जिनको परम प्रिय हैं तेई कृतार्थरूप हैं और सब ब्रह्मेन्द्रादि सुरेश्वरों करिके पूजनीय हैं ॥ ७९ ॥

यहां तक श्रीनारदजी के वचन हैं ( दोहा )

प्रेम सहित सीता सहित, नितजपिये श्रीराम ।
जीवत यश सुख सम्पदा, अंत मिले हरि धाम ॥१॥

ध्यायन्कृते यजन् यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयन् ॥ यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ श्रीरामकीर्तनात् ॥ ८० ॥

विष्णुपुराण विषे व्यासजी शुकदेवजी के प्रति कहते हैं, आदि कृत युग में परमात्मा का ध्यान करने से, और त्रेता में यज्ञों को करने से तथा द्वापर में श्रीसीतारामजी की पूजा करने से जो सुगति मिलती थी सोई सुगति कलियुगमें श्रीरामनाम कीर्तन जप करने से मिलती है निःसंदेह ॥ ८० ॥

दोहा ।

कृतयुग त्रेता द्वापर, पूजा मख अरु योग ॥

जो गति होय सो कलि हरि, नामते पावहिं लोग ।१

रामेति नाम यात्रायां ये स्मरन्ति मनीषिण: ॥ सर्वसिद्धिर्भवेत्तेषां यात्रायां नात्र संशय: ॥ ८१ ॥

देवीभागवत विषे व्यासजी कहते हैं, जे बुद्धिमान लोग श्रीराम ऐसा नाम स्मरण उच्चारण करते हैं तिनको जिस लिये यात्रा करते हैं सो सब सिद्धियां प्राप्त होती हैं इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥ ८१ ॥

श्रीरामेति परं जाप्यं तारकं ब्रह्म संज्ञकम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नमिति वेदविदो विदु: ॥८२॥ श्रीराम रामेति जना ये जपन्ति च सर्वदा ॥ तेषां

भुक्तिश्च मुक्तिश्च भविष्यति न संशयः ८३

सनत्कुमार संहिता विषे व्यासजी कहते हैं, हे धर्मराज युधिष्ठिर ! श्रीराम यही जितने जपने योग्य मंत्र हैं तिन सबों से परे जपने योग्य, ब्रह्मसंज्ञक कही ब्रह्मस्वरूप नाम, संसार सागर के पार उतार देनेवाला, ब्रह्महत्यादि सब पापों का नाश करनेवाला है, यह समस्त वेदों के ज्ञाता जन जानते हैं ॥ ८२ ॥ सो ऐसा श्रीराम रामराम जे जन सर्वदा जपते हैं, तिनको ( भुक्ति ) दिव्य भोग और मुक्ति होने में संशय नहीं है ॥ ८३ ॥

( चौ० )

सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू ॥

लोक लाहु पर लोक निबाहू ॥

यस्य संस्मरणादेव सर्वार्थाश्चाक्षि-गोचराः॥ भवन्त्येवाप्रयासेन तच्छ्री-राममहं भजे ॥ ८४ ॥

विश्वामित्र संहिता विषे श्रीविश्वामित्र जी कहते हैं, जिनके नाम स्मरण ही से सब पदार्थ विना प्रयास ही अक्षिगोचर कहो प्राप्त होते हैं, तिन श्रीरामचन्द्र जी को हम भजते हैं ॥८४॥

धन्याः पुण्याः प्रपन्नास्ते भाग्य-युक्ताः कलौ युगे॥ संविहायाथ योगा-दीन् रामनामैकनैष्ठिकाः ॥ ८५ ॥

कलियुग में, भगवत शरणागत जन तेई धन्य हैं, पुण्यरूप हैं, भाग्ययुक्त हैं, कि जे

कठिन मार्ग योगादिकों को भली भाँति त्याग-
कर एक श्रीरामनाम ही में निष्ठ होकर जप
करते हैं ॥ ८५ ॥

नातः परतरं वस्तु श्रुतिसिद्धान्त-
गोचरम् ॥ दृष्टं श्रुतं मया क्वापि सत्यं
सत्यं वचो मम ॥ ८६ ॥ यन्नामवैभवं
श्रुत्वा शङ्कराच्छुकजन्मनि ॥ साक्षा-
दीश्वरतां प्राप्तः पूजितोहं मुनीश्वरैः ॥
८७ ॥ रामस्यातिप्रियं नाम रामेत्येव
सनातनम् ॥ दिवा रात्रौ गृणन्नेषो
भाति वृन्दावने स्थितः ॥ ८८ ॥
येषां रामः प्रियो नैव रामे न्यूनत्व-
दर्शिनाम् ॥ द्रष्टव्यं न मुखं तेषां

सङ्गतिस्तु कुतस्तराम् ॥ ८९ ॥

शुकसंहिता विषे शुकदेवजी कहते हैं। हमारे वचन सत्य हैं सत्य हैं, श्रीराम नाम से परे सिद्धान्त गोचर वस्तु और कोई नहीं है, हमने भी कहीं नहीं देखा सुना ॥ ८६ ॥ क्योंकि हमने पूर्व ही ( शुक ) तोता के जन्म में श्रीशंकरजी के मुख से जिस नाम के माहात्म्य ऐश्वर्य्य को सुनकर साक्षात् ईश्वरता को प्राप्त होकर मुनीश्वरों करिके पूजित हुए ॥ ८७ ॥ श्रीरामजी का अतिप्रिय सनातन नाम राम यही है, इसी को दिन रात जपते हुए ( एषः ) श्रीकृष्णचन्द्र वृन्दावन में विराजे शोभित हैं ॥ ८८ ॥ जिनको नाम रूप लीला धाम वैभव सहित श्रीरामजी प्रिय नहीं हैं

और श्रीराम सर्वेश्वर विषे न्यूनत्व अर्थात् येतो पूर्ण भगवान् के अंश हैं इस बुद्धि से देखते हैं, तिन अज्ञानिन का मुख, श्रीरामानुरागी लोगों को नहीं देखना चाहिये, उनकी संगति करने की बात ही क्या है ॥ ८९ ॥ पद विनय ॥ जाके प्रिय न राम वैदेही ॥ तजिए ताहि कोटि वैरी सम यद्यपि परम सनेही ॥

( कवित्त ) घनाक्षरी )

रामनाम हीन भ्राता भीति, मीत मौत सम रामनाम हीन पिता पित्त औ प्रमेह है। रामनाम हीन वेद वेदना समान, शास्त्र शस्त्र-घात, संहिता कुसंहिता सी खेह है ॥ रामनाम हीन रसिकाई रसखाई सव सङ्ग रसरंगमणी अंग अंग नेह है। रामनाम संयुत सबै सप्राण ज्यों

शरीर रामनाम हीन जिमि प्राण हीन देह है॥१॥

**दृष्टं श्रुतं मया सर्वं यत्किञ्चित्सार-मुत्तमम् । परन्तु रामनामैकवैभवन्तु परात्परम् ॥ ९० ॥**

विष्णुपुराण विषे श्रीसनत्कुमारजी श्रीवसिष्ठजी से कहते हैं। हमने समस्त वेद वेदान्तों का जो कुछ उत्तम सारांश था सो सब देखा और सुना। परन्तु उन सबों में परसे भी पर एक श्रीरामनाम ही का ऐश्वर्य्य प्रताप देख पड़ा ॥९०॥

चौपाई ।

करौं कहां लगि नाम बड़ाई ।
राम न सकहिं नामगुन गाई ॥

**श्रमं मृषैव कुर्वन्ति ज्ञानयोगादि-**

साधने ॥ कथं भजंति नो राम-नाम सर्वेशपूजितम् ॥ ९१ ॥

सनक सनातन संहिता विषे सनकादिकों ही का वचन है। सब लोग ज्ञान योगादि साधनों विषे वृथा ही परिश्रम करते हैं, भला ब्रह्म रुद्रादि सब ईश्वरों करिके पूजित अर्थात् माहात्म्य ज्ञान पूर्वक उपासनीय जो श्रीराम-नाम तिसको क्यों नहीं भजते भाव ज्ञान योगादि साधनों में वृथा परिश्रम क्यों करते हैं उनसे अधिक फल विना श्रम ही नाम भजन करिकै क्यों नहीं लेते ॥ ९१ ॥

( सवैया )

न मिटै भव संकट दुर्घट है तप तीरथ

जन्म अनेक अटो ॥ कलि में न विराग न ज्ञान कहूं सब लागत फोकट झूठ जटो ॥ नट ज्यों जनि पेट कुपेटक कोटिक चेटक कौतुक ठाट ठटो ॥ तुलसी जो सदा सुख चाहिय तौ रसना निशि वासर राम रटो ॥ १ ॥

पद विनय ॥

रामनाम छाँड़ि जो भरोसो करै और रे ।
तुलसी परोसो त्यागि माँगै कूर कौर रे ॥

**ब्रह्माण्डशतदानस्य यत्फलं समुदाहृतम् ॥ तत्फलादधिकं विन्देत सकृच्छ्रीराममुच्चरन् ॥ ९२ ॥**

शुक पुराण ( उपपुराण ) विषे अगस्त्यजी सुतीक्ष्णजी से कहते हैं । सौ ब्रह्माण्ड के

ऐश्वर्यों के दान करने का जो फल कहा गया है, उससे भी अधिक फल एक वार श्रीरामनाम उच्चारण करने का जानना चाहिये । यहां यह तात्पर्य्य है कि ऐश्वर्य्य सहित सौ ब्रह्माण्ड नाशमान ही तो हैं इस्से उनके दान का फल भी नाशमान है, और श्रीरामनाम अविनाशी के उच्चारण का फल भी अविनाशी है इस्से अधिक है ॥ ९२ ॥

रामनामजपतः कुतो भयं सर्वतापशमनैकभेषजम् ॥ पश्य तात मम गात्रसंनिधौ पावकोपि सलिलायतेऽधुना ९३

नृसिंह पुराण विषे प्रहलादजी अपने पिता हिरण्यकश्यप से कहते हैं, हे पिता रामनाम

जो जीव जपते हैं तिनको कुछ भय नहीं होता है संपूर्ण जो दुःख है तिसको नाश करने में एक श्रीरामनाम औषध है हे तात आप प्रत्यक्ष देखिये जो हम अग्नि में पड़े हैं सो अग्नि जल के सदृश शीतल लगती है।९३।

**रामनामजपेनैव तदर्चा चोत्तमा स्मृता॥ जपहीना कलौ पूजा प्रतिष्ठावर्द्धिनी भुवि ॥ ९४ ॥**

वसिष्ठस्मृति विषे श्रीवसिष्ठजी कहते हैं। श्रीरामनाम जप करने ही से तिन श्रीरामजी की पूजा उत्तम है, और कलियुग में श्रीराम नाम के जप विना सब पूजा भूमि में भक्तों की मान प्रतिष्ठा ही मात्र बढ़ा देती है, तात्पर्य्य

लोकप्रतिष्ठा परमार्थ की विरोधिनी है इससे नाम रटन पूर्वक ही पूजा करे ॥ ९४ ॥ रे मन, श्री-रामनाम रटे बिना श्रीरामजी का उपासक नहीं होता है ।

यथा कवित्त ।

रटे नहीं नाम सो उपासक न राम को । होत कहा बिबिध बनाये बात व्याधवत आध ना मिटत विना ध्याए सुखधाम को । प्रबल उपासक सिरोमनी रहस्यनिधि निरखिये नैन निज बीर अभिराम को ॥ ऐसो जप्यो नाम एक रस बसु जाम रोम रोम अंक दाम बात बिदित मोहाम को । युगल अनन्य शक सकल बिहाय कहैं रटे नहीं नाम सो उपासक न राम को ॥ १ ॥

रामनामपरा ये च रामनामार्थ-

चिन्तकाः ॥ तेषां पादरजस्पर्शात् पावनं भुवनत्रयम् ॥ ९५ ॥ कृष्णनारायणादीनि नामानि जपतोऽनिशम् ॥ सहस्रैर्जन्मभीरामनाम्नि स्नेहो भवत्युत ॥ ९६ ॥

जे जन श्रीरामनाम में परायण होकर जपते हैं और श्रीरामनाम का अर्थ चिन्तवन करते हैं तिनके चरणरज के स्पर्श से तीनों लोक पवित्र हो जाते हैं ।

चौपाई ।

तीरथ अमित कोटि सम पावन ॥ नाम अखिल अघ पुंज नशावन ॥ तात्पर्य्य, नामपरायण नाममय हो जाते हैं इस्से वे भी नाम

ही के सम पवित्र हैं ॥ ९५ ॥ भगवान् के श्रीकृष्ण नारायण आदिक नामों को मनुष्य जब हजारों जन्म तक जपते हैं तब शिव सर्वस्व श्रीरामनाम में सच्चा स्नेह होता है।

चौपाई।

वैष्णव धर्म जन्म बहु करई ॥ तब याहि मारग को अनुसरई ॥ श्रीरामनाम की प्रीति ऐसही दुर्लभ है ॥ ९६ ॥

रकारोच्चारणेनैव बहिर्निर्यांति पातकम् ॥ पुनः प्रवेशकाले च मकारस्तु कपाटवत् ॥ ९७ ॥ सावित्री ब्रह्मणा सार्द्धं लक्ष्मीर्नारायणेन च॥शंभुना राम रामेति पार्वती जपति स्फुटम् ॥९८॥

**राम रामेति रामेति स्वपन् जाग्रंस्तथा निशि ॥ ये जपन्ति कलौ नित्यं तेवै श्रीरामरूपिणः ॥ ९९ ॥**

पुलह संहिता का वचन है। राकार उच्चारण करने ही से हृदय के पाप बाहर निकल जाते हैं, फिर मकार का उच्चारण कपाट सम लग जाता है इस्से पाप पुनः प्रवेश नहीं कर सकते ॥ ९७ ॥ सावित्री ब्रह्माजी के साथ तथा लक्ष्मीजी श्रीमन्नारायणजी के साथ और पार्वती महादेवजी के साथ ये तीनों शक्तिएँ अपने अपने स्वामियों के साथ स्पष्ट श्रीरामनाम जपती हैं ॥ ९८ ॥ कलियुग में राम राम राम ऐसा नाम नित्य ही जे जन दिन रात जागतें सोवत जपते हैं ते श्रीरामजी के रूप ही हैं ॥

क्योंकि लिखा है "यो यं स्मरति सतद्रूपो भवति" जो जिसको स्मरण करता है सो उसी का रूप हो जाता है ॥ ९९ ॥

अन्तःकरणसंशुद्धिर्नान्यसाधनतो भवेत् ॥ कलौ श्रीरामनामैव सर्वेषां सम्मतं परम् ॥ १०० ॥

मार्कण्डेय संहिता का वचन है। सब महामुनिजनों का परम संमत है कि कलियुग विषे मन बुद्धि चित्त अहंकार इन चारो अन्तःकरण की शुद्धि श्रीरामनाम ही से होती है, अन्य साधनों से नहीं होती ॥ १०० ॥

विनय पद।

रामनाम के जपते जाय जियकी जरनि ॥

कलिकाल अपर उपायते अपाय भए जैसे तम नाशिवे को चित्र के तरनि ।

**धन्या माता पिता धन्यो तच्चधन्यतमं कुलम् ॥ यत्र श्रीरामनाम्नस्तु जापको जायते शुचिः ॥ १०१ ॥**

दक्षस्मृति का वचन है। वह माता धन्य है और वह पिता धन्य है, सो कुल अतिशय धन्य है कि जहाँ श्रीरामनाम का जप करनेवाला पवित्रात्मा पुरुष उत्पन्न होय ॥ १०१ ॥

**प्रजप्तव्यं सदा प्रेम्णा तन्मंत्रं रामनामकम् ॥ विनैव दीक्षां विप्रेन्द्र पुरश्चर्यां विनैव हि ॥ १०२ ॥ विनैव न्यासविधिना जपमात्रेण सिद्धिदम् ॥**

तस्मान्मंत्रं जपेद्धीमान् संविहायान्य-
साधनम् ॥ १०३ ॥

हारीतस्मृति का वचन है। जिस्को श्री शिवजी काशी के मरनेवाले जीवों को देकर मुक्त करते हैं सो श्रीरामनाम मंत्र को सदा प्रेमसहित जपना चाहिए, यह मंत्र विना दीक्षा लिए ही, विना वर्णलक्ष प्रमाण पुरश्चरण किये ही ॥१०२॥ और अङ्गन्यास करन्यासादि विधि किये विना ही केवल जप मात्र ही से सिद्धि देनेवाला है, इस्से बुद्धिमान् और साधनों को त्याग कर श्रीरामनामात्मक मंत्र को अवश्य जपै॥ यह मंत्र दीक्षा लिए विना ही सिद्ध होता है इसका तात्पर्य्य यह है कि बिना

दीक्षा ही सिद्ध होता है तब दीक्षा लेने पर क्या कहना है ॥ १०३ ॥

कवले कवले कुर्वन् रामनामानुकीर्तनम् ॥ यःकश्चित्पुरुषोऽश्नाति सोन्नदोषैर्न लिप्यते ॥ १०४ ॥ सिक्थे सिक्थे लभेन्मर्त्यो महायज्ञाधिकं फलम् ॥ यः स्मरेद्रामनामाख्यं मंत्रराजमनुत्तमम् ॥ १०५ ॥

अत्रिस्मृति का वचन है । जो कोई पुरुष कौर कौर प्रति श्रीरामनाम उच्चारण करते हुए भोजन करता है तिस्को अन्न के दोष अर्थात् नीच का अन्न, अशुद्ध अन्न अभोज्यादि दोष नहीं लगते, परन्तु हम नामस्मरण करके

भोजन करैंगे यह दोष मिट जायगा ऐसा विचार के अशुद्ध अन्न वा मांसादिक नहीं खाना चाहिए क्योंकि शुद्ध आहार हीं से नाम में प्रेम बढ़ता है॥ १०४॥ जो मनुष्य अति उत्तम श्रीरामनामाख्य मंत्रराज जप करते भोजन करता हैं सो (सिक्थे २) एक एक चावल खाने में महायज्ञ से भी अधिक फल पावता है॥ १०५॥

असंख्यजन्मसुकृतैर्युक्तो यदि भवेन्नरः॥ तदा श्रीरामसन्मंत्रे रतिः संजायते नृणाम्॥१०६॥ तन्नाम स्मरतां लोके कर्मलोपो भवेद्यदि॥ तेषां तत्कर्म कुर्वन्ति त्रिंशत्कोट्यो महर्षयः१०७

सामवर्तकस्मृति का वचन है। जब मनुष्य अनन्त जन्मों के सुकृत करके युक्त होता है तब सुन्दर मंत्र श्रीरामनाम में परम प्रीति उत्पन्न होती है॥ १०६॥ तिन श्रीरामजी का नाम स्मरण करते हुए जो संध्या वन्दनादि-कर्म लोप हो जायँ तो उसके निमित्त तीस कोटि महाऋषि वह कर्म करते हैं॥ १०७॥

**न तावत्पापमस्तीह यावन्नाम्ना वि-नश्यति॥ अतिरेकभयादाहुः प्राय-श्चित्तान्तरं बुधाः॥ १०८॥**

क्रतुमुनि की स्मृति का वचन है। इस-लोक में उतना पाप है ही नहीं कि जितना श्रीरामनाम के स्मरण करने से विनाश हो

जाता है, इस से अतिरेक कही अधिकता के भय से बुद्धिमान मुनियों ने और नाना प्रकार के प्रायश्चित्त अर्थात् पाप नाश होने के उपायों को कहा है, अभिप्राय यह है कि खरहा के मारने को ब्रह्मास्त्र छोड़ना अयोग्य है क्योंकि नामस्मरण से तो अंतर्यामी परमात्मा की प्राप्ति होती है ॥ १०८ ॥ ( चौ० ) अस प्रभु अछत हृदय अविकारी ॥ सकल जीव जग दीन दुखारी ॥ नामनिरूपन नाम जतनते सोउ प्रगटत जिमि मोल रतनते ॥

ऋग्वेदोथ यजुर्वेदस्सामवेदस्त्वथर्वणः ॥ अधीतास्तेन येनोक्तं राम इत्यक्षरद्वयम् ॥ १०९ ॥

मंत्रप्रकाश का वचन है। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्वणवेद इन चारो वेदों को वह पढ़ चुका कि जो पढ़ना आदि सब छोड़ कर राम इन दो अक्षरों को दिन रात कहता है। भाव चारो वेदों का सारांश श्रीरामनाम ही है॥ १०९॥

जगज्जैत्रैकमंत्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम्॥ यःकंठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ११० ॥

श्रीरामरक्षास्तोत्र का वचन है। सब जगत के विजयी जो एक मंत्र श्रीरामनाम है तिनसे रक्षित यन्त्र जो कण्ठ में धारण करता है तिसके हाथ में सब सिद्धियां आय जाती हैं॥११०॥

वारां निधौ पततु गच्छतु वा हुताशम् वंध्या थवा भवतु तज्जननी खरारेः॥ भक्तिर्न यस्य विमलेश्वरनाम्नि शुद्धे जीवन्छवो जगति गर्हितकर्मकर्त्ता ॥१११॥

वैशंपायनसंहिता का वचन है। वह समुद्र में गिर कर डूब जाय, वा आग में गिर कर जर जाय, अथवा उसकी माता बांझ हो जाय, क्योंकि वह संसार में महानिन्दित कर्म करनेवाला जीवता ही मरा सम है कि जिस की भक्ति खर राक्षस के मारनेवाले (विमलेश्वर) श्रीअयोध्या के ईश्वर श्रीरामजी के शुद्ध नाम में नहीं है॥ १११॥ (सवैया) तिन्ह ते खर शुकर श्वान भले जड़ता वश तें न कहैं

कछुवै ॥ तुलसी जेहि रामसों नेह नहीं सो सही पशु पूछ विखानन द्वै ॥ जननी कत भार मुई दश मास भई किन बाँझ गई किन च्वै ॥ जरि जाउ सो जीवन जानकीनाथ जिये जग में तुम्हरो विनहै ॥ १ ॥

श्रीरामनामाविमुखं जीवं शोधयितुं क्षमम् ॥ प्रायाश्चित्तं न चैवास्ति कश्चित्सत्यं वचो मम ॥ ११२॥ प्रायाश्चित्तेषु सर्वेषु रामनामजपं परम् ॥ यतीनां रामभक्तानां सर्वरीत्या विशिष्यते ११३

पराशरसंहिता का वचन है । श्रीरामनाम से विमुख पापी जीव को शुद्ध करने में समर्थ ( प्रायश्चित्त ) पापशांतिक कर्म कोई

है ही नहीं, यह सत्य सत्य हमारा वचन है ॥
॥ ११२ ॥ सब प्रायश्चित्तों में श्रीरामनाम का
जप परम उत्तम प्रायश्चित्त है, और संन्यासी
तथा श्रीरामभक्तों को तो सब प्रकार से वि-
शेष करके पापशांतिक कर्म श्रीरामनाम ही
का जप है ॥ ११३ ॥

कुष्ठरोगी भवेल्लोके बहुधा ब्रह्महा नरः ॥
सकृदुच्चारितं नाम शीघ्रं तत्संक्षयत्य-
पि ॥ ११४ ॥

बृहद्गौतमी तंत्र का वचन है । लोक में
बहुधा ब्रह्महत्या ही करनेवाला मनुष्य कुष्ट-
रोगी होता है सो उस कुष्ट रोग को भी श्री-
रामनाम का उच्चारण शीघ्र नाश कर देता है ११४

इसमें प्रत्यक्ष प्रमाण भक्तमाल में पद्मनाभजी और काशी के वैश्य का है कि तीन वार श्री-रामनाम उच्चारण से कुष्ट अच्छा कर दिया ॥

चतुर्युगेषु श्रीरामनाममाहात्म्यमुज्वलम् ॥ सर्वोत्कृष्टं न संदेहो कलौ तत्रापि सर्वथा ॥ ११५ ॥

श्रीरामनाम का अति उज्वल माहात्म्य चारो युगों में प्रसिद्ध है, तहां कलियुग विषे तो सबयुगों से उत्तम नाम ही का माहात्म्य सर्वथा संदेह विना प्रसिद्ध है ॥ ११५ ॥

चौपाई ।

चहुँ युग चहुँ श्रुति नाम प्रभाऊ ।
कलि विशेष नहिं आन उपाऊ ॥

रामनामविहीनस्य जातिः शास्त्रं जपस्तपः ॥ अप्राणस्य तु देहस्य मण्डनन्तु वृथा यथा ॥ ११६॥ यत्र यत्र समुद्धारो दृश्यते श्रूयतेऽथवा ॥ रामनाम्नैव नित्यं च तत्र तत्र न संशयः ॥ ११७ ॥ क्षणार्द्धमपि चैकान्ते स्थित्वा येषां रतिः परे ॥ रामनामात्मके मंत्रे तेषां जन्मादिकं नहि ॥ ११८ ॥

भुशुंडिरामायण का वचन है। श्रीरामनाम से विमुख जीव का सुजातिपना, शास्त्र पढ़ना, अनेक मंत्रों का जप, तप आदि सब कैसे व्यर्थ हैं कि जैसे मतक देह का शृंगार वृथा

है क्षण में भस्म हो जाता है ॥११६॥ जहां जहां जीवों का भवबंधन से उद्धार दीख पड़ता है अथवा सुन पड़ता है तहां तहां नित्य श्रीराम-नाम ही से जानना इसमें संशय नहीं है। क्योंकि तारक एक श्रीरामनाम ही ज्ञानादि का कारण है ॥ ११७ ॥ आधा क्षण भी जे सुजन एका-न्त में बैठकर परम मंत्र श्रीरामनाम विषे प्रीति करके जपते हैं तिनका जन्म मरण फिर नहीं होता ॥ ११८ ॥

येषु येष्वपि देशेषु रामनाम उपासते ॥ दुर्भिक्षादैन्यदोषाश्च न भवन्ति क-दाचन ॥ ११९ ॥ रामरामेति संततं प्रेमतःपठनात फलम् ॥ वाचा-सिद्धया-

दिकं सर्वं स्वयमेव भवेद्ध्रुवम्॥१२०॥

आदिरामायण का वचन है। जिस जिस देश में सुजन श्रीराम नाम की उपासना अर्थात् रामनाम में स्थित होकर जपते हैं तिस तिस देश में दुर्भिक्षादि दीनता और भी महामारी आदि दोष कभी नहीं होते ॥ ११९ ॥

दोहा।

रामनाम को मोहड़ा, बोइवो बीज अघाय॥
सबौं सूखा जो परै, तबौ न निरफल जाय॥१॥

राम राम ऐसा निरंतर पाठ करने से वचन सिद्धि आदिक सब फल आप से आप निश्चय करके प्राप्त होते हैं ॥ १२० ॥

राममनामानि लोकेऽस्मिन् सर्वदा यस्तु

कीर्तयेत् ॥ तस्यापराधकोटींस्तु क्षमाम्येव न संशयः ॥ १२१ ॥ श्रीरामनामसामर्थ्यमतुलं विद्यते द्विज ॥ नहि पापात्मकस्तावत्पापं कर्तुं क्षमः क्षितौ ॥ १२२ ॥ श्रीमद्रामेतिनाम्नस्तु सदा सर्वत्र कीर्तनम् ॥ नाशौचं कीर्तने तस्य तत् पवित्रकरं यतः ॥ १२३ ॥

बौद्धायनसंहिता विषे किसी भक्त मुनि के प्रति सर्वेश्वर राजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी के वचन हैं । इस लोक में जो कोई हमारे रामनाम को सदा कीर्त्तन उच्चारण करता है, तिसके हम कोटान अपराधों को क्षमा करते हैं इसमें कुछ संशय नहीं है ॥ १२१ ॥ हे विप्र ! हमारे राम-

नाम की पापनाशिनी सामर्थ्यता अतुल है, पृथिवी में उतना पाप पापात्मा करने में समर्थ ही नहीं जितना नाम नाश करते हैं ॥१२२॥ परन्तु नाम के नाश करदेने के बल से जान कर पाप नहीं करै क्यों वह नामापराध होजाता है ॥

दोहा।

रामनाम आधीरती, कोटिन पाप पहार ॥
बलिहारी यह नामकी, जारि करै सब छार ॥

श्रीरामनाम का कीर्तन उच्चारण सर्व समय सर्व देश में करना योग्य है, नामकीर्तन में पवित्र अपवित्र दशा का विचार नहीं करै क्योंकि श्रीरामनाम स्वयं पवित्र हैं अपवित्र दशा, देश को भी पवित्र कर लेते हैं ॥१२३॥

यावन्तो ब्रह्मणो वक्त्रान्निर्गता वेदराशयः ॥ ते च सर्वेऽप्यधीतास्स्युर्नारायण इतीरिते ॥ १२४ ॥ नारायणस्य यावन्ति पुराणेष्वागमेषु च ॥ दिव्यनाम्नां सहस्राणि कीर्तयन् यत्फलं लभेत ॥१२५ ततः कोटिगुणं पुण्यफलं दिव्यं मदात्मकम् ॥ लभते सहसा ब्रह्मन् सकृद्रामेति कीर्तनात् ॥ १२६ ॥ मन्नामकीर्तने हृष्टो नरः पुण्यवतांवरः ॥ तस्य पादरजस्पर्शाच्छुद्ध्यति क्षितिमण्डलम् १२७

आदिरामायण में नारदजी के प्रति परमपुरुष प्राणप्रिय श्रीरामजी का वचन है, जि-

तनी वेदों की राशि ब्रह्माजी के मुखों से निकली हैं तिन सबों के पढ़ने पाठ करने का फल श्रीनारायण नाम के उच्चारण से होता है ॥ १२४ ॥ और श्रीनारायण जी के जितने पुराण शास्त्र तंत्रों में हजारों दिव्य नाम हैं रूप गुण सम्बंधवाले, तिन सबों के कीर्तन करने से जो फल प्राप्त होता है ॥ १२५ ॥ हे नारदजी उससे कोटिगुणा दिव्य पुण्य फल हमारा दिव्य नाम राम इस नाम का एक बार ( कीर्तन ) उच्चारण करने से अवश्य मिलता है ॥ १२६ ॥ हमारे राम नाम के कीर्तन करने से जो पुण्यवन्तों में श्रेष्ठ नर हर्षित प्रीतियुक्त होते हैं तिनके चरणों के रज (धूलि) के स्पर्श से पृथिवीमंडल मात्र पवित्र होता है ॥ १२७ ॥

असंख्यैः पुण्यनिचयैः कोटिजन्मार्जितैरपि ॥ पंचाङ्गोपासनाभिश्च रामनाम्नि रतिर्भवेत् ॥ १२८ ॥

हे नारदजी जब जीवों का कोटान जन्मों का कमाया असंख्य पुण्य समूह उदय होता है और शिव शक्ति गणेश सूर्य श्री विष्णु इन पंचांग देवताओं की उपासना कर लेते हैं तब राम नाम में परम प्रीति होती है, भाव जिस प्रीति से हम मिलते हैं ॥ १२८ ॥

यावन्न नामभक्तानां सततं पादसेवनम् ॥ रामनाम्नि परे तावत्प्रीतिस्संजायते कथम् ॥ १२९ ॥ पापिष्ठा भाग्यहीनाश्च पापकर्मणि तत्पराः ॥

तेषां मुखेभ्यो मन्नाम्नः कथमुच्चा-
रणं भवेत् ॥ १३० ॥

जबतक मेरे नामानुरागी भक्तों के चरणों का सेवन नहीं किया तब तक सब नामों से परे जो मेरा रामनाम है तिसमें प्रीति कैसे उत्पन्न होवै ॥ १२९ ॥ भला जे पापी भाग्य-हीन पापकर्म ही में परायण हैं तिनके मुखों से मेरा राम नाम कैसे उच्चारण हो सकै नहीं होता ॥ १३० ॥ ( चौ० ) पापवंत कर सहज सुभाऊ । भजन मोर तेहि भाव न काऊ ॥

यदि वातादिदोषेण मद्भक्तो माञ्च न स्मरेत् ॥ अहं स्मरामि तं भक्तं नयामि परमां गतिम् ॥ १३१ ॥ मन्नामोच्चारकं

साधुं सादरं पूजयन्ति ये॥ तेषा महंसमु-
द्धर्ता मृत्युसंसारसागरात् ॥ १३२ ॥
ये पिबन्ति सदा स्नेहान्मम नाम सुधा-
सरः॥ तेतिधन्याः प्रियास्माकं सत्यं-
सत्यं ब्रवीम्यहम्॥ १३३ ॥ मद्वाक्यमा-
दरेद्यस्तु समे प्रियतमो नरः॥ तस्यार्थं
सर्ववस्तूनि सृजामि वसुधातले॥१३४॥
मन्नाम संस्मरेद्यस्तु सततं नियतेन्द्रियः॥
तस्मात् प्रियतमः कश्चिन्नास्ति
ब्रह्माण्डमण्डले ॥ १३५ ॥

श्रीवासिष्ठरामायण में श्रीरामजी के श्री
मुख का वचन है। अन्तकाल में जो वात

पित्त कफ सन्निपातादि दोष के वश होने से मेरा भक्त मुझे नहीं स्मरण करै, तौ भी मैं उस भक्त का स्मरण करता हूं और परम गति को ले जाता हूं ॥ रे मन, इस श्रीमुख बचन को दृढ़ रख के नाम स्मरण कराकर ॥ १३१ ॥ मेरे नामोच्चारण करने वाले साधु को आदर समेत जे पूजते हैं, तिनको मैं मृत्युरूपी जल-पूर्ण संसारसागर से अनायास उद्धार कर देता हूं ॥ १३२ ॥ जे जन हमारा नाम जो अमृत का सर है तिस्को स्नेहपूर्वक पीते हैं (जपते हैं) ते जन परम धन्य हैं और हम-को अतिप्रिय हैं यह हम सत्य सत्य कहते हैं ॥ १३३ ॥ जो हमारे वचनों का आदर करता है अर्थात् जो हम कहते हैं सो प्रेम से

करता है सो नर हमको परमप्रिय है, उसी के अर्थ सब सुखमय पदार्थ भूतल में हम उत्पन्न करते हैं ॥ १३४ ॥ जेजन सब इन्द्रियों को जीतकर निरंतर हमारे नाम को भली भांति से स्मरण करते हैं, तिनसे परम प्रिय हमको ब्रह्माण्डमंडल में कोई नहीं हैं ॥ १३५ ॥

चौपाई ।

अस सुभाव कहुं सुनो देखौं ।
केहि खगेश रघुपाति सम लेखौं ॥
उमा राम सुभाव जिन जाना ।
ताहि भजनताजि भाव कि आना ॥

श्रुत्वाश्रीरामनाम्नस्तु प्रभावं वै परात्परम् ॥ सत्यं यो नाभिजानाति

द्रष्टव्यं तन्मुखं नहि ॥ १३६ ॥

ब्रह्मपुराण का वचन है। श्रीरामनाम का परात्पर प्रभाव गुण श्रवण करके जो अपने मनमें सत्य नहीं मानता, उस नीच नामापराधी का मुख देखने योग्य नहीं है ॥ १३६ ॥

अर्थवादं परे नाम्नि भावयन्तीहये-नराः ॥ सपापिष्ठो मनुष्याणां निरये पतति स्फुटम् ॥ १३७ ॥

कात्यायन संहिता का वचन है। जो नर श्री रामजी के परम नाम के परत्व प्रभाव में अर्थवाद अर्थात् केवल प्रशंसा मानता है सत्य नहीं मानता सो सब पापी मनुष्यों में महापापी है वह अवश्य महाघोर नरक में पड़ता है॥१३७॥

रामनाम्नः परं तत्वं समं वा यस्त्वघी वदेत्॥ संसर्गं तस्य यः कुर्य्याद्रामद्वेषी भवेत्तु सः॥ १३८॥

जो पापी मनुष्य श्रीरामनाम के समान अथवा उससे परे और दूसरा तत्व सिद्धान्त कर कहता है, सो ऐसा श्रीरामजी से विमुख है कि उसका संसर्ग करने वाले श्रीरामजी के विरोधी हो जाते हैं॥ १३८॥

सवैया।

राम विहाय कै कोटिक बात बनाय कहैं तिनके मुखमूके। रामविहाय जहां लगि योगि औ ज्ञानिन के मुखमें लिये लूके॥ श्रीरघुनाथ विहाय कै हाय बनाय तेई जग जानहु चूके।

गेछालिते वलि जे न गए पदके सदके रघुनन्दन जूके ॥ १ ॥

ब्रह्मांभोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययम् श्रीमच्छंभुमुखेन्दुसुन्दरवरे संशोभितं सर्वदा ॥ संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनम् धन्यास्ते कृतिनः पिबन्ति सततं श्रीरामनामामृतम् ॥ १३९ ॥

ते सुकृती शिरोमणि जन धन्य हैं कि जे श्रीरामनामरूप महाअमृत निरन्तर पान करते अर्थात् रसना से स्मरण करते हैं, कैसा श्रीरामनामामृत कि ब्रह्म जो वेद, उसी क्षीरसमुद्र से उत्पन्न भया है, और कलिकाल का मल

जो पाप तिसके नाश करने वाला है, और अव्यय कही स्वयं विनाशरहित एकरस है क्योंकि उस अमृत का रूप पान करने से नहीं रहता देह में लय हो जाता है तैसा नहीं, श्रीमान् शिवजी के श्रेष्ठ सुन्दर मुखचन्द्र में सदा शोभित है, संसार का जन्ममरणरूप रोग का औषध कही नाशक है, और अत्यन्त मीठा है, श्रीजानकीजी का जीवन प्राण ही है तात्पर्य्य श्रीजानकी संप्रदायी जीवमात्र का जीवन प्राण है, ऐसे अमृत के पीनेवाले धन्य हैं ॥ १३९ ॥

मुक्तिस्त्री-कर्णपूरौ मुनि हृदयवयःपक्षती तीरभूमी संसारापारसिंधोः कलिकलु-षतमस्तोमसोमार्कबिम्बौ ॥ उन्मी-

लत्पुण्यपुंजद्रुमललितदले लोचने च श्रुतीनां कामं रामेति वर्णौ शमिह कलयतां संततं सज्जनानाम् ॥ १४० ॥ रामनामात्मकं ग्रंथं चिन्तनीयमिमं सदा ॥ श्रावयेन्न कदाचिद्वै श्रीरामोपासकं विना ॥ १४१ ॥

'राम' ये जो दोनों अक्षर हैं ते सज्जनों के यथेष्ट कल्याण निरन्तर परिपूर्ण करैं, कैसे दोनों अक्षर हैं कि मुक्तिरूपिणी स्त्री के दोनों कानों के मानो सौभाग्यविभूषण हैं, पुनः कैसे हैं, कि मुनिजनों के हृदयरूप पक्षी के मानो दोनों पक्ष हैं भाव इन्हीं के बल से परम व्योमास्थित श्रीरामजी के समीप की प्राप्ति है, पुनि

कैसे हैं॰ कि संसाररूप अपार समुद्र के मानो दोनों तट की भूमि हैं भाव इन दोनों वर्णों की उपासना से संसार का पर पार मिल जाता है, फिर कैसे हैं॰ कि कलिकाल का पापरूप अंधकार समूह नाशने को मानो चन्द्र सूर्य दोनों के बिंब हैं (‘र’ सूर्य ‘म’ चन्द्र,) और कैसे हैं दोनों॰ कि पुण्यसमूहरूप कल्पवृक्ष के ऊगनेके समय के मानो ललित दोनों पत्र हैं, तथा कैसे हैं दोनों वर्ण कि समस्त श्रुति के मानों दोनों नेत्र हैं भाव, इन दोनों वर्णों के विना, श्रुतिसंपन्ना बुद्धि भी अंधी है, ऐसे ‘राम’ ये दोनों वर्ण सज्जनों को इस जगत् में सुखपूर्ण करैं ॥ १४० ॥ यह श्रीरामनामयशप्रकाश ग्रंथ सदा चिन्तन करने योग्य है, परन्तु श्री-

रामनामानुरागी रामोपासक के बिना और किसी को कभी नहीं सुनाना चाहिए क्योंकि वह सुनकर झूठा ही मानेगा तब शीघ्र ही नरक में पड़ैगा ताते नहीं सुनाना चाहिए ॥१४१॥

रे मनमित्र ! भला बिचार तो कर कि जिन परब्रह्म राजाधिराज श्रीरामचन्द्रजी के निर्वाणदायक नाम महाराज का यश परत्व इस प्रकार ईश्वर मुनीश्वर यतीश्वरों करके अनेक सद्ग्रंथों विषे कहा गया तिनके सगुण निर्गुणात्मक अनूप रूप का परत्व तो नाम के साथ ही वर्णन होगया, और जब उनका नाम ब्रह्मा विष्णु महेश मुनीश्वरों करके भजनीय है तब रूप भजनीय क्यों नहीं होगा किन्तु अवश्य होगा, और रूपही के निवास लीला

करने का धाम अयोध्या अपराजिता साकेत सान्तानिक परमव्योम आदि नामों करिकै प्रसिद्ध है, इससे तूँ अपने परम इष्ट श्रीसीतारामजी का नाम जप रूप ध्यान कर धाम में बस लीला श्रवण कर और ऐश्वर्य्य परत्व मनन कर क्योंकि श्रीवशिष्ठसंहिता में ऐसाही कहा है।

( श्लोक ) रामस्य नाम रूपं च लीला धाम परात्परम् ॥ एतच्चतुष्टयं नित्यं सच्चिदानन्दविग्रहम् ॥ १ ॥

अर्थ ॥ श्रीरामजी का नाम, रूप, लीला और परात्परधाम ये चारो नित्यही सच्चिदानंदविग्रह हैं १

दोहा ।

रामनाम सम नाम नहिं, रामरूप समरूप ।
रामधाम सम धाम नहिं, यश रसरंग अनूप ॥१॥

नाम रूप लीला रुचिर, धाम धारना पांच।
रामचरण इन पांच बिन, राम उपासक कांच॥२॥

(श्लोक) तुलस्यामालतिलकं धनुर्बाणांकितौ भुजौ॥ राममंत्राभिनामाद्यं संस्कारो रामसेवके॥१॥

अर्थ॥ तुलसीमाला और तिलक धारण और धनुषबाण से अंकित दोनों भुजा और राम मंत्र जप श्रीरामनाम स्मरण यह सब श्रीरामसेवक का संस्कार है॥१॥

रे मनमित्र! ऐसे परम प्रभु को अनन्य हो कर भजन करु और सब रूप अवतार श्रीरामजीही के हैं सबको श्रीरामजी के जानकर प्रणाम कर सबसे श्रीसीतारामजी की प्रीति

मांग श्रीगुरुवचनों में विश्वास कर श्रीसीता-रामजी की कृपा की आस रख दोनों लोक में मंगल मोद मिलैगा॥

दोहा।

श्रीतुलसी वाणी बिमल, तिमि तुलसीकी माल।
जिनके गल रसरंगमणि, ते तरिहैं कलिकाल॥१॥
जय जय श्री सरजू अवध, सिय रघुबर हनुमंत।
भरत लखन रिपुदवँन जय, श्रीगुरुधनुशर संत॥२॥

इति श्रीसीतारामोपासक रामानन्दीय स्वामि अनंत श्रीसीताराम शरण श्रीरामरसरङ्गमणि शिष्येण श्रीसियारघुवरशरणेन संग्रहीतं श्री-सीतारामनामयशप्रकाशं सम्पूर्णम्॥

संवत् १९६६ फाल्गुनपूर्णिमायाम्॥

॥ श्रीसीतारामार्पणमस्तु॥ श्रीहनुमते नमः।

## अथ श्रीरामनाम रसरङ्ग विलासम् ।

### कवित्त ।

नामहीं रटत प्रहलाद शुक शौनकादि पुंडरीक पाराशर नारदादि गावहीं । नामहीं रटत रुकमाङ्गदादि भीष्म बालि त्रिजटा विभीषनादि रटैं राम नामहीं ॥ नामहीं रटत धर्मसूनु शिवी रन्तिदेव भरत दधीचि हरिचन्द यश पावहीं । नामहीं रटत रसरङ्गमणी हटै दुख रटै मुख तब जब रामहीं रटावहीं ॥ १ ॥ नामहीं रटत हैं सुकंठ हनुमंत जामवंत अंगदादि अनगन्त कीस राजहीं । नामहीं रटत मुनि लोमस भुसुंडि वालमीक वैनतेय जागवल्क भरद्वाजहीं ॥ नामहीं रटत श्रीवसिष्ठ वामदेव अत्रि गौतम सुतीक्षन अगस्त्य नाम गावहीं ।

नामहीं रटत रसरङ्गमणी हटै दुख रटै सुख तब जब रामहीं रटावहीं ॥ २ ॥ नामहीं रटत हैं गनेस सेस औ दिनेस विधि अमरेस त्यों महेस रटलावहीं । नामहीं रटत शुद्धज्ञानी औ विरागी योगी त्यागी सिद्ध साधक सुभागी राम नामहीं ॥ नामहीं रटत हरिभक्त जक्त नेह-त्यक्त दिवानक्त अनुरक्त रूपाशक्त गावहीं । नामहीं रटत रसरङ्ग मणी मिलै मुक्ति दूसरी न जुक्ति वेद नामहीं बतावहीं ॥ ३ ॥ नामहीं रटे हैं रामानुज रामानन्द-स्वामी तुलसी-गो-स्वामी प्रेमधामी रटे नामहीं । नामहीं रटे हैं कीलदेव अग्रदेव नाभा नामदेव कवीरादि सबै भक्त गावहीं ॥ नामहीं रटे हैं चारि संप्रदा अनंत-संत पंथ अनपंथ ग्रंथ नामके बनावहीं ।

नामहीं रटत रसरङ्गमणी मिलै मुक्ति दूसरी न जुक्ति वेद नामहीं बतावहीं ॥ ४ ॥ नामहीं रटत कलिकलुष कटत सुख सटत सुभक्त जीव मुक्ति पद पावहीं। नामहीं रटत रामरूप रति प्रगटत घटत कुचाम-बाम प्रीति परिणामहीं ॥ नामहीं रटत रामलीला लखि लोभै मति तन धन लोकलीला नहीं मन भावहीं। नामहीं रटत रसरंगमनी प्रेमानन्द पावै जीव जोपै मन नाम में जुटावहीं ॥ ५ ॥ नामहीं रटत राम धाम ध्यान वास मिलै मानसी सुप्रीति पूजा झिलै चित्त चावहीं। नामहीं रटत भवविषया विरति होति माया गोति काम मद दंभ न सतावहीं नामहीं रटत रस भावना सुभाग जागे भालकी कुभाग भागै राम प्यारे लागहीं। नामहीं रटत

रसरंगमनी परा भक्ति पावैं जीव औरे जुक्ति सपनें न पावहीं ॥ ६ ॥ नामहीं में रूपराम नामहीं अनूप धाम नामहीं मैं गुणग्राम प्रभुता सु-नामहीं । नामहीं में भाव भक्ति नामहीं में रस-व्यक्ति नामहीं में प्रेमी ज्ञानी प्रेमा परा पावहीं ॥ नाम को प्रभाउ एक जानैं रघुराउ शिव हनु-मत आदिक कौं आपुही जनावहीं । "सीता राम शरण" चरण परि माँगै वर रसरंग सीता राम नामहीं रटावहीं ॥ ७॥ गंग सम नीर अरु सिंधुसो गँभीर नाहिं धीर काममर्दन सो वीर नाहिं कामसो। शुकसो न संत और ऋतु है वसंत सो न बली हनुमंत सो न दायावन्त रामसो ॥ हितू सतसंगसो न और रस रंगमनी सुखसो न अंग ना कुसंग वामचाम सो । तंत्र पंचरात्रसो न

तंत्री सो न जंत्र आन मंत्री न सुमंत्र सो न मंत्र रामनाम सो ॥ ८ ॥

दोहा।

नाम प्रभाव अपार अति, मति मन वाणी पार।
गुरु करुणा रसरङ्गमणि, अष्टक कियो उचार ॥१॥

विनयपत्रिका पद ।

भरोसो जाहि दूसरो सो करो मोको तौ राम को। नाम कल्पतरु कलि कल्याण फरो ॥ १ ॥ कर्म उपासन ज्ञान वेद मत सो सब भांति खरो मोहिं तौ सावन के अंधहि ज्यों सूझत रंग हरो ॥२॥ चाटत रह्यो श्वान ज्यों पातरि कबहु न पेट भरो सो हौं सुमिरत नाम सुधारस पेखत परसि धरो ॥ ३ ॥ स्वारथ अरु परमारथ हूं को नहिं कुंजरो नरो सुनियत सेतु पयोधि पषान-

नि करि कपि कटक तरो ॥ ४ ॥ प्रीति प्रतीति जहां जाकी तहँ ताको काज सरो मेरे तौ माय बाप दोउ आखर हौं शिशु अरनि अरो ॥ ५ ॥ शंकर साखि जो राखि कहौं कछु तौ जरि जीह गरो अपनो भलो रामनामहिं ते तुलसिहि समुझि परो ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीरामानुजाचार्य्यकृतं श्रीराममन्त्रार्थम् ॥

## श्लोक ।

रकारार्थो रामस्सगुणपरमैश्वर्य्यजलधिर्मकारार्थो जीवस्सकलविधि कैङ्कर्य्यनिपुणः ॥ तयोर्मध्याकारो युगलमथ सम्बन्धमनयोरनन्यार्हम्ब्रूते त्रिनियमस्वरूपोयमतुलः ॥ १ ॥ श्रीजी-

वान् रमयत्यसौ त्रिजगतां स्वानन्दकारी वपुस्तस्मै सद्विभवे करोमि शरणं न स्यामहं देहभृत् ॥ तत्कैङ्कर्य्यप्रयोजनं मम सदा मन्त्रै चतुर्थ्यानम इत्येवम्प्रतिपाद्यतेऽत्र मनुना ह्यर्थस्तु वेदात्मकः ॥ २ ॥

अथ श्लोकार्थ कवित्व।

बीजमें रकार अर्थ राम ईश मोद धाम परम विभूति दिव्य गुण सिंधु जानिए। त्यों मकार अर्थ जीव रामस्वामि सेवालीन मोह ममता ते हीन ज्ञानानन्द मानिए। ईश जीव वीचकी अकार जीव सों कहत राम सेवा जोग तूँ न आन उर आनिए। राम मंत्र वीज ती-

नौ वेदन को सार शुद्ध जपै रसरङ्गमणि राम ध्यान ठानिए ॥ १ ॥ श्रीसिया को अरु सब जीवन रमावैं निज रमनीय रूपते त्रिलोकानन्द दानीजू। ऐसे सद्वैभव श्रीरामको शरण करौं जाते जग देह नहीं धरौं चारि खानीजू। उनहीं की सेवा सौं प्रयोजन है मोहिं सदा मंत्र में चतुर्थी औ नमह हेतु मानीजू। ऐसो यह राममंत्रराज अर्थ वेदरूप कहै रसरङ्गमणी रामानुज ज्ञानी जू ॥ २ ॥ इति श्रीराममन्त्रार्थः समाप्तः ॥

रेमन " श्रीरहस्यत्रै " इस पतासे मंगाकर देखने योग्य है सेठ छोटेलाल लक्ष्मीचन्द की दुकान से जि० फैजाबाद श्रीअयोध्याजी। न्योछावर दो आना =)

कवित्त।

पाञ्चाल जन्म भयो मुलतान शिष्य भए सुमिरि स्वरूप चलि अवध में आए हैं। सी-ताराम रसिकन संग पाय पाए निधि सिया सिधि देश धाम मिथिला सिधाए हैं॥ सीता धाम सुखलहि जुगल प्रियादिकन सीताराम संत जस सुने औ सुनाए हैं। "रसरङ्ग" परगुरुशरण श्रीराम प्रिया पञ्च भूत त्यागि राम हिए सो लगाए हैं॥१॥ जन्महीं ते जानकीश जोग अनुरागे जगभोग तिय त्यागे रामरूप गुरु पाए हैं। गलता समीप सिय भाविक श्रीचन्द्र अली संग भाव पाय पुनि अवध में आए हैं॥ सियारामशरण, श्रीराघवेन्द्रसखा, किए मुख्य शिष्य मानों

शशि सूरज सोहाए हैं। श्रीरामप्रियाशरण जू रसरंग पर गुरु पंच भूत त्यागि रामधाम को सिधाए हैं॥२॥ मिथिला अवध प्राग चित्रकूट अंतर में विचरे विराग अनुराग उमगाए हैं। भक्तमाल भाँषिकै अभक्तन कों भक्त किए दिए राममंत्र मद मांस ते छोड़ाए हैं॥ बहुकाल वपु राखि नाखि कै प्रयाग, परलोक को पयान जानि अवध में आए हैं। श्रीरामप्रियाशरण जू रसरंग पर गुरु पंच भूत त्यागि रामधाम को सिधाए हैं॥३॥

दोहा।

शत उनइस तिरपन असित, द्वादसि भौम अषाढ॥ परगुरु गवने रामपुर, तन तजि सरजू बाढ़॥१॥

( छप्पै )

श्रीकामदेन्द्र गुरु सुहृदरस आवेशी एकै प्रवल ॥ राघवेन्द्र वरसखा भुवन विख्यात सोहाए। दिव्यरूप अनुभाव याहितन प्रगट देखाए ॥ श्रीयुत सीताराम नाम प्रिय उचरत आनन। वाल व्याह तजि चरित वनादिक सुनत न कानन ॥ सियराम रसिक सम्बंध दै शिष्य किए रसरंग भल। श्रीकामदेन्द्र गुरु सुहृदरस आवेशी एकै प्रवल ॥ ४ ॥ ( क० ) सम्बत उनीसशत साठ में कुवाँर मास सुकल परीवा वार मंगल बिचारे हैं। अवध सुधाम में प्रभात समै सावधान मणिरसरंग नाम युगल उचारे हैं ॥ राम विरहानल में तीनों तन जारि पाय दिव्यरूप सीताराम ध्यान उर धारे हैं। स्वा-

मीजी श्रीराघवेन्द्रसखा कामदेन्द्रमणि सबलोक त्यागि रामधाम को पधारे हैं ॥ ५ ॥ [ अनन्त श्रीसीतारामशरण श्रीरामरसरंगमणिजी महाराज, श्रीसियारघुवरशरण ( "हरगौरी," मौजे, महसौरा, जि० मुंगेर, निवासी ) के गुरु भगवान सम्बंधाचार्य हैं आपकी थोरीसी जीवनचरित्र श्रीजानकीशरणजी ( ऽस्नेहलता ) नवीन भक्तमाल प्रेमाम्बुनिधि में लिखी है यथा । ]

॥ छप्पै ॥

रीवां राज सुमध्य जन्म लिये ब्राह्मण कुल महँ । आवत जुवा बिराग धारि लिये बास अवध कहँ ॥ आर्ष काव्य अरु श्रीतुलसीकृत रसिक सुजाना । भजनानंद प्रसिद्ध भक्तमाली गुण खाना ॥ श्रीकामदेन्द्रमणि शिष्यप्रिय सखा

रामरसरङ्गमणि । आवेशी सुदृढ़ सनेह निधि राजहिं एकै मधि अवनि ॥ ६ ॥ प्रथम सरयु-तट वसे मौन होइ दुइदशवरषा । पुनि आचार-ज वृत्ति धारि दिये सब कहँ हरषा ॥ बधक सिय पिय भक्ति बिबिध बर ग्रंथ बनाये । सीताराम सुनाम बिलासादिक मन भाये ॥ राचे टीका ध्यान सुमंजरी अरु रामस्तवराज की । बांचत जेहि नेह लता बढ़त प्रीति भक्ति रघुराज की ॥७॥ श्री अवधेन्द्र कुमार अनन्यो-पासक भारी । रंचहु प्रभु की न्यूनताइ नहिं सकहिं सँभारी ॥ सेवा भजन सुध्यान माँहि बितवहिं बसु जामा । नेम नित्तबर जाप केर-लाखों प्रभु नामा ॥ इन्द्रीजित भाषी सत्यवच मुखदेखी काहु न कहैं । ताहि नेह लता

कबहुँन तजैं करि करुणा जेहि करैं गहैं ॥ ८ ॥ ज्ञाता परम सुभक्तमाल स्वामी-नाभाकृत । बहुजन पढ़ि सुनि कथा भये श्रीरामकृपाश्रित ॥ रखहिं प्रयोजन मात्र जगत जनते व्यवहारा । देखे कबहुंन दृग उठाइ क आनन्दारा ॥ ❀ उनहत्तर अधिक उनैस शत समा मास माधव असित । नौमी तन तजि श्रीरामपुर गये दिव्य बपु पास मित ॥ ९ ॥

( ❀ स० १९६९ बैशाख कृष्ण नौमी गुरु-वार को ब्रह्ममुहूर्त वेला में अनन्त श्रीस्वामी श्रीरामरसरंगमणि महाराजजी परे साकेत को पधारे )

कवित्त ।

श्री है संप्रदाय इष्ट जानकी श्रीराम मंत्र

तारक षडक्षर श्रीराजध्यान सार है । सेवक सु सेव्यभाव भक्तिरसोपास्यमत अग्रस्वामि मारग श्रीकीलस्वामिद्वार है। आचारज श्रीरामानुज रामानन्दस्वामी वेष कंठी छाप धनुबान प्रान रामाकार हैं। सीताराम सख्यप्रद जैश्रीरसरंगमणि *गुरुराम सख्य रूप अवध अगार हैं ॥ १० ॥

( * श्रीसियारघुवर शरण ( रामरसरूपमणि ) जी का ।

श्रीगोप्यअली ( ज्ञानकलाजी ) कृत ( कवित्त )

रंग हैं अपार भरो सीतारामहीं के वसें अचल श्रीरामधाम तट राम गंग हैं । गंग है कीरति जासु पावन करन हारी जपैं सीताराम सुख त्यागि जग संग हैं । संग हैं सदैव रघुनन्द सुख चंद जूके कलिके कुचाल को करनिहार

भंग हैं। भंग हैं न जिनके मनोर्थ गोप्य अलि
ऐसे संत रसवंत स्वामी मणिरसरंग हैं॥ ११ ॥

सवैया।

रंग हैं राम छके को सके गुण गाइ सुमुख्य
सियापति अंग हैं। अंग हैं सोभित राम सुआ-
युध ध्यान धैरं तट रामहिं गंग हैं॥ गंग हैं
कीरति पावनि जासु कहैं यशराम को बैठि
सुसंग हैं। संग हैं गोप्यअली प्रभु के नित
ऐसे सुस्वामी मणीरसरंग हैं॥ १२ ॥

इति शुभम्।

1523